Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 40

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

5 अक्तूबर 2017 ई. 14 मुहर्रम 1439 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

बराहीने अहमदिया में मेरे बारे में ख़ुदा तआला की यह भविष्यवाणी है कि कत्ल इत्यादि बुराई से मैं बचाया जाऊंगा

अत: आज तक बावजूद कई हमलों के ख़ुदा तआला ने दुश्मनों के षडयन्त्रों से मुझे बचाया।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

52. बावनवां निशान - यह कि पंडित दयानन्द जो आर्यों के लिए बतौर गुरू के था। जब उसका फ़ित्ना सीमा से बढ़ गया तो मुझे दिखाया गया कि अब उसके जीवन का अन्त है। अत: उसी वर्ष में उसका निधन हो गया। मैंने शरमपत नामक एक आर्य को जो क़ादियान निवासी है यह भविष्यवाणी घटित होने से पूर्व बता दी थी और वह अब तक जीवित है।

53. तिरेपनवां निशान - यह है कि इसी शरमपत का एक भाई विशंबर दास एक फौजदारी मुक़द्दमे में शायद डेढ़ वर्ष के लिए क़ैद हो गया था। तब शरमपत ने अपनी व्याकुलता की अवस्था में मुझ से दुआ की विनती की अत: मैंने उसके बारे में दुआ की। तो मैंने इसके पश्चात् स्वप्न में देखा कि मैं उस आफ़िस में गया हूं जहां क़ैदियों के नामों के रजिस्टर थे तथा उन रजिस्टरों में प्रत्येक क़ैदी की क़ैद की अवधि लिखी थी। तब मैंने वह रजिस्टर खोला जिसमें विशम्बर दास की क़ैद के बारे में लिखा था कि इतनी क़ैद है। मैंने अपने हाथ से उसकी क़ैद की आधी अवधि काट दी। जब उसकी क़ैद के बारे में चीफ़ कोर्ट में अपील की गई तो मुझे दिखाया गया कि मुकद्दमे का परिणाम यह होगा कि मुकद्दमे की मिस्ल ज़िले में वापस आएगी तथा विशम्बर दास की आधी क़ैद कम की जाएगी किन्तु बरी नहीं होगा। मैंने वे समस्त परिस्थितियां उसके भाई लाला शरमपत को मुकद्दमे का परिणाम घोषित होने से पूर्व बता दीं थीं और अन्तत: ऐसा ही हुआ जो मैंने कहा था।

54. चव्वनवां निशान - मौलवी साहिबज़ादा अब्दुल-लतीफ़ शहीद के क़त्ल होने के बारे में भविष्यवाणी है जो बराहीन अहमदिया में लिखी है।

55. पचपनवां निशान - मियां अब्दुल्लाह सिन्नौरी की एक असफलता के बारे में भविष्यवाणी है। इस भविष्यवाणी के पूरा होने का साक्षी स्वयं मियां अब्दुल्लाह सिन्नौरी है।

56. छप्पनवां निशान - यह है कि मैंने देहली में अपनी शादी के बारे में भविष्यवाणी की थी। यह इल्हाम मैंने बहुत से लोगों को बताया था जो अब तक जीवित मौजूद हैं तथा इस के बारे में बराहीन अहमदिया में यह इल्हाम है जिस से यह प्रकट होता था कि वह रिश्ता सादात में होगा। اذکر نعمتی رئیت خدیجتی

57. सत्तावनवां निशान - मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन बटालवी के बारे में "बराहीन अहमदिया" में यह भविष्यवाणी है कि वह मेरे बारे में काफ़िर कहने के लिए प्रयास करेगा और कुफ्र का फ़त्वा लिखेगा।

58. अट्ठावनवां निशान - मौलवी नज़ीर हुसैन देहलवी के बारे में 'बराहीन अहमदिया' में यह भविष्यवाणी है कि वह कुफ्र का फ़त्वा देगा।

59. उनसठवां निशान - शैख़ महर अली होशियारपुरी के बारे में भविष्यवाणी। अर्थात् मैंने स्वप्न में देखा कि उसके घर में आग लग गई और फिर मैंने उसे बुलाया। यह इस बात की ओर संकेत था कि अन्तत: मेरी दुआ से छुटकारा प्राप्त होगा। यह पूर्ण भविष्यवाणी मैंने पत्र द्वारा शैख़ महर अली को सूचित किया। तत्पश्चात् भविष्यवाणी के अनुसार उस पर क़ैद की विपत्ति आई और फिर क़ैद के पश्चात् भविष्यवाणी के दूसरे भाग के अनुसार उसने मुक्ति पाई।

60. साठवां निशान - इसके बाद शैख़ महर अली के बारे में एक और भविष्यवाणी की गई थी कि वह एक और भयानक विपत्ति में ग्रस्त होगा अत: इसके बाद वह लक़्वा (पक्षाघात) के रोग का शिकार हो गया और फिर हाल ज्ञात नहीं।

61. इकसठवां निशान - अपने भाई स्वर्गीय मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर की मृत्यु के बारे में भविष्यवाणी है जिसमें मेरे एक बेटे की ओर से किसी दूसरे से क़िस्से के तौर पर मुझे यह इल्हाम हुआ -

اے عمّی بازئ خویش کر دی
و مرا افسوس بسیار دادی۔

शेष पृष्ठ 12 पर

123 वां
जलसा सालाना क़ादियान

दिनांक 29, 30, 31 दिसम्बर 2017 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 123 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 29, 30 और 31 दिसम्बर 2017 ई.(जुम्अ:, हफता व इतवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद (नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

अल्लाह तआला की राह में खर्च करना

(अताउल मुजीब राशिद साहिब)

(पवित्र उपदेश और ईमान वर्धक घटनाएं) (अन्तिम भाग-5)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक सहाबी साई दीवान शाह साहिब अपने कादियान आने का कारण कुछ यूं वर्णन करते हैं। "क्योंकि मैं गरीब हूँ चंदा तो दे नहीं सकता। कादियान जाता हूं कि मेहमान ख़ाना की चारपाइयां बुन आऊं और मेरे सिर से चंदा उतर जाए।)

(असहाबे अहमद जिल्द 13 पेज 9)

माल हो तो उसकी मांग और इच्छा के बावजूद धार्मिक आवश्यकताओं को प्राथमिकता देना और ख़ुदा की राह में खर्च करना बहुत हिम्मत की बात है और महान इनाम का कारण। लेकिन वित्तीय कठिनाई के बावजूद, अल्लाह तआला के रास्ते में खर्च करने के लिए, अपना सब कुछ प्रस्तुत कर देना वास्तव में सबर और कुरबानी का चरम स्थान है।

वित्तीय कुर्बानी की महानता का स्तर उसकी मात्रा नहीं बल्कि वह ईमानदारी, श्रद्धा और इरादा है जिस से वह कुरबानी की जाती जाती है। हज़रत मिर्जा अब्दुल लहक साहब मरहूम वकील सरगोधा ने एक अहमदी सकह (माशकी) की यह घटना कई बार जगह जगह उल्लेख की कि इस का काम शहर की नालियां साफ करने वाले कार्यकर्ताओं के लिए अपनी मशक से पानी डालना था। उनकी मासिक आय (उस समय) 32 रुपये था। वह इस आय के साथ नियमित रूप से 20 रुपये चन्दा अदा करता था, और शेष व्यक्ति 12 रुपये में अपने परिवार का गुज़ारी करता था। नि:सन्देह कुर्बानी की यह गुणवत्ता बहुत पुरस्कृत है और कई लोगों के लिए एक शिक्षा है

कादियान के एक दरवेश को आशिकाना कुर्बानी का अन्दाज़ा ऐसा है कि रूह पर वजद की अवस्था छा जाती है। शमसुद्द्दीन साहिब शारीरिक रूप से अपाहिज थे, हर समय एक चोटी सी कोठरी में पढ़े रहते थे। वसीयत का निज़ाम 1905ई में शुरू हुआ। यह 1 919 ई में इस में शामिल हो गए लेकिन इस अपाहिज और माज़ूर का फिदा होने का नमूना देखें कि आपने 1 9 01 ई से चन्दा वसीयत देना शुरू किया। और न केवल उसने पूरे जीवन दिया, बल्कि आने वाले वर्षों का भी दे दिया और 1 99 0 ई तक का चन्दा वसीयत अदा कर दिया जबकि उनकी मृत्यु 1 9 50 में हुई थी। मानो वह तस्वीरी भाषा में कह रहे थे कि काश मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना में पैदा होता और आरम्भिक अहमदियों में शामिल होता, और काश मैं 1 99 0 ई तक जीवन पा कर इस्लाम की सेवा कर सकता। कुर्बानी का यह अनूठा जोश एक ऐसे व्यक्ति का है जो विकलांग था। यहां तक कि चल नहीं सकता था, पहलू तक बदल नहीं सकता था। ज़बान में हकलाहट थी, लेकिन इस फिदाई का दिल कितना जोश वाला और कुर्बानी की भावना से भरा था

(उद्धरण वह फूल जो मुरझा गए लेखक चौधरी फ़ैज़ अहमद गुजराती भाग-1 पृष्ठ 60 से 62)

बेहद नाज़ुक और कठिन परिस्थितियों में, दिली भावनाओं को त्याग कर, राहे ख़ुदा में कुर्बानी करना कोई मामूली बात नहीं। इसके अनगिनत अहमदियत में दिखाई दे रहे हैं। हज़रत काजी मुहम्मद यूसुफ साहिब पेशावरी ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना की एक घटना यूं वर्णन की है कि

"वज़ीर आबाद के शेख़ परिवार का एक जवान आदमी की मृत्यु हो गई है। उसके पिता ने दफनाने के लिए 200 रुपए रखे हुए थे। हज़रत मसीह मौऊद ने लंगर के खर्च के लिए तहरीक फरमाई उन को भी ख़त गया तो उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को पैसे भिजवाने के बाद लिखा कि मेरा जवान लड़का प्लेग से मर गया है मैंने इस की अन्तिम क्रिया के लिये 200 रुपये रखे थे जो सेवा में भेजता हूं और लड़का अपने कपड़ों में दफन करता हूँ।"

(पत्रिका ज़हूरे अहमद मौऊद पृष्ठ 70.71 मुद्रित 30 जनवरी 1955)

क्या यह संभव है कि किसी व्यक्ति के जीवन में यह अवस्था आ जाए कि उसे कहा जाए कि अब तुम्हें अधिक वित्तीय कुर्बानी करने की ज़रूरत नहीं है? जाहिर में ऐसा लगता है कि यह संभव नहीं है क्योंकि ज़रूरतें और योजनाएं आगे बढ़ती चली जाती हैं, लेकिन यह वास्तविकता है कि जमाअत के इतिहास में एक ऐसे व्यक्ति भी गुज़रे हैं जिसकी अनूठी और निस्वार्थ कुर्बानियों को,देखते हुए, वास्तव में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन्हें फरमाया कि अब उन्हें और अधिक वित्तीय कुर्बानीों की आवश्यकता नहीं है यह बुजुर्ग व्यक्ति हज़रत डॉक्टर खलीफा रशीदुद्दीन साहब रज़ि अल्लाह थे जिनके विषय में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह ने फरमाया:

उनकी वित्तीय कुर्बानी इस हद तक बढ़ी हुई थीं कि हज़रत साहब ने उन्हें लिखित प्रमाण दिया कि आप को कुर्बानी की ज़रूरत नहीं है मुझे याद है कि हज़रत साहिब का वह समय जब आप पर मुकदमा गुरदासपुर में हो रहा था और इस में रुपया की बहुत ज़रूरत थी। हज़रत साहिब ने दोस्तों को तहरीक की कि चूंकि ख़र्च बढ़ रहे हैं। लंगर दो स्थानों पर हो गया है। एक कादियान में और एक गुरदासपुर में इसके अलावा, इस के अतिरिक्त मुकदमा पर खर्च हो रहा है। इसलिए, दोस्त सहायता की तरफ ध्यान दें। जब हज़रत साहिब की तहरीक डॉ साहिब को पहुंची, तो ऐसा हुआ कि उसी दिन आप को आप का वेतन लगभग 450 रुपए मिले, उन्होंने उसी समय वह सारा का सारा आप की सेवा में भिजवा दी। एक दोस्त ने कहा कि आप कुछ घर की ज़रूरत के लिए रख लेते तो उन्होंने कहा कि खडुदा का नबी कहता है कि धर्म के लिए आवश्यकता है, तो फिर और किस के लिए रख सकता हूं? अत: डाक्टर साहिब तो धर्म के लिए इतना बढ़े हुए थे कि कि हज़रत साहिब को उन्हें रोकने की आवश्यकता महसूस कर रही थी। और उन्हें यह कहना पड़ रहा था कि अब उन्हें कुर्बानी की ज़रूरत नहीं है।

(दैनिक अलफज़ल 11 जनवरी 1 9 27)

पुरुषों की वित्तीय कुर्बानियों का उल्लेख हो रहा है। सच्चाई यह है कि जमाअत की महिलाओं को भी इस वित्तीय जिहाद में पुरुष के कंधा से कंधा में मिला कर बल्कि कुछ मामलों में पुरुषों से भी बड़ कर आगे रहती हैं। मस्जिदों के निर्माण के अवसर पर जिस तरह पुरुष अपनी जेबें खाली करते और वेतन लिफाफा बंद के बंद चंदे में दे देते हैं, महिलाएं भी अपने सोने के ज़ेवर इसी वालहाना तरीके से चन्दा में प्रस्तुत करती हैं जैसे उनके कीमती गहने की कौड़ी बराबर भी कीमत न हो। शादी के गहनों के डब्बों के डब्बे बंद के बंद समय के ख़लीफा के कदमों में रख देती हैं।

मैं इस तथ्य का एक गवाह हूं कि जब मैनचेस्टर में बैल फुतूह लन्दन के लिए तहरीक की गई तो एक नौजुवान हाजिर लोगों में से उठ कर आया ।उसके हाथ में एक लिफाफा था। उसने उस लिफाफे को प्रस्तुत किया और कहा कि कुछ समय पहले मुझे पिछले महीने का वेतन मिला। मैंने अभी इस लिफाफे को खोल कर नहीं देखा। मस्जिद के बारे में इस तहरीक को सुनकर यह बंद लिफाफा प्रस्तुत करता हूं।

इसी मज्लिस में एक अन्य युवा का नमूना भी अविस्मरणीय है जो धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देने का एक उत्तम उदाहरण है। तहरीक को सुनने के बाद, वह मंच पर आया और एक लिफाफा की पेशकश की और कहा कि कुछ दिनों के बाद मैंने शादी करनी है। मैं वलीमा के लिए 500 पाउंड बचत कर रहा था। ख़ुदा के एक घर के निर्माण की आवाज़ सुनकर आ गया हूं कि वलीमा का प्रबंध तो ख़ुदा तआला किसी न किसी प्रकार कर देगा। धर्म के इस अवसर को हाथ से न जाने दूं। मेरी ओर से यह सारी रकम मस्जिद के लिए स्वीकार करें।

एक ही मज्लिस का एक और ईमान वर्धक घटना है। मस्जिद के निर्माण की मुबारक तहरीक के करने के अवसर पर जब मैंने वादों की सूची पर नज़र डाली तो देखा कि सबसे अधिक वादा एक अहमदी महिला का था। मैंने भाषण में इसका ज़िक्र किया और पुरुषों को ध्यान दिलाया और सम्मान दिलाया। एक मित्र ने औरत के दस हज़ार पाऊंड के मुकाबला में पंद्रह हज़ार का वादा किया। कुछ पलों में, उस महिला की तरफ से एक कागज़ आया कि मेरा वादा 20,000 पाऊंड होगा। जब मैंने इस की घोषित की उस आदमी ने तुरंत अपना

शेष पृष्ठ 11 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला ने अपने फज़ल से एम टी ए के द्वारा अहमदिया जगत को इस प्रकार इकट्ठा और सचेत कर दिया है कि अब समय के ख़लीफा के दौरों और जमाअत के प्रोग्रामों और ख़बरों को सुनने के लिए लम्बा इंतज़ार, और जमाअत के समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के लिए इंतजार नहीं करना पड़ता बल्कि साथ के साथ हर ख़बर पहुंच रही होती है, हर कार्यक्रम देखा जा रहा होता है, बल्कि जलसे के प्रोग्रामों और माहौल के बारे में सुनने वालों की तरफ से कई अवसरों पर शीघ्र टिप्पणी और भावनाओं की अभिव्यक्ति प्रोग्रामों के दौरान ही दिखाई देती हैं।

इंसान अल्लाह तआला का धन्यवाद अदा करता है और प्रशंसा करता है कि अल्लाह तआला ने यह नेअमत उपलब्ध कराकर कैसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत को तौहीद और एकता की लड़ी में पिरो दिए जाने का ज़ाहरी सामान उपलब्ध करा दिया है। अतः इसके लिए, हमें जहां अल्लाह तआला का धन्यवाद करना चाहिए, वहां एम टी.ए के काम करने वालों का जिन में स्वयंसेवक काम करने वाले भी हैं और पूर्ण रूप से सारा समय काम करने वाले भी उन का धन्यवाद अदा करना चाहिए।

जलसा के प्रोग्रामों में जो एम टी ए पर दिखाए जाते हैं इस के बारे में तो लोग अपनी टिप्पणी भेजते रहते हैं इन कार्यक्रमों से भी लाभान्वित हो रहे होते हैं और वे आनंद भी ले रहे होते हैं, लेकिन जलसा पर आए हुए ग़ैरो की अभिव्यक्तियां, भावनाएं और श्रमिकों की सेवा पर भावनाओं की अभिव्यक्ति न तो जलसा के दिनों में दिखाई और बताई जाती है और न ही यह किसी प्रकार से पता चल सकता है। ये स्वंय सेवक जो अपने कर्तव्य के अलावा एक ख़ामोश मुबल्लिग़ का काम कर रहे हैं, इनका पता न तो एम.टी.ए की सक्रीन दे रही होती और न ही कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले इस का हक अदा कर सकते हैं।

इसी प्रकार जलसा में शामिल होने वाले भी अपने व्यवहार से एक अच्छा प्रभाव मेहमानों पर छोड़ रहे होते हैं जिस का प्रकटन बाद में मेहमान करते हैं। अतः आवश्यक है कि जलसा सालाना के प्रभावों का ये भाग भी लोगों के सामने प्रस्तुत किया जाए। इसलिए मैं ये प्रस्तुत करता हूं ताकि दुनिया में रहने वाले अहमदियों को भी पता चले कि जलसा के प्रभाव किस प्रकार लोगों के लिए प्रभाव का कारण बनते हैं और शामिल होने वालों और स्वयं सेवकों को भी पता चले कि इन के रवैये किस प्रकार खामोशी से ग़ैर-लोगों को शांति से इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षा के क़रीब ला रहे हैं।

विभिन्न देशों से आए हुए मेहमानों के जलसा सालाना में शामिल होने के बाद अभिव्यक्तियां।

अल्लाह तआला के फज़ल से जलसा बहुत लोगों के सीने खोलता है। बहुत से लोगों की शंकाएं दूर करता है। इस्लाम की वास्तविक तस्वीर इन लोगों के सामने आती है। अल्लाह तआला इन बरकतों को हमेशा फैलाता चला जाए।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 1 सितम्बर 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

अल्लाह तआला ने अपने फज़ल से एम टी ए के द्वारा अहमदिया जगत को इस प्रकार इकट्ठा और सचेत कर दिया है कि अब समय के ख़लीफा के दौरों और जमाअत के प्रोग्रामों और ख़बरों को सुनने के लिए लम्बा इंतज़ार, और जमाअत के समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के लिए इंतजार नहीं करना पड़ता बल्कि साथ के साथ हर ख़बर पहुंच रही होती है, हर कार्यक्रम देखा जा रहा होता है, बल्कि जलसे के प्रोग्रामों और माहौल के बारे में सुनने वालों की तरफ से कई अवसरों पर शीघ्र टिप्पणी और भावनाओं की अभिव्यक्ति प्रोग्रामों के दौरान ही दिखाई देते हैं।

बहरहाल, कुछ दिनों पहले जैसा कि हर कोई जानता है कि जर्मनी का जलसा हुआ इस के बारे में भी मुझे लोगों ने लिखा, और विभिन्न देशों के प्रोग्रामों के बारे में लोग मुझे लिखते रहते हैं और विशेष रूप से जहां भी जाऊं वहां के बारे में लोगों की विशेष अभिव्यक्ति होती है। विभिन्न प्रकार की भावनाएं होती हैं और इंसान ख़ुदा तआला का धन्यवाद अदा करता है और प्रशंसा करता है कि अल्लाह तआला ने यह नेअमत उपलब्ध कराकर कैसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत को तौहीद और एकता की लड़ी में पिरो दिए जाने का ज़ाहरी सामान उपलब्ध करा दिया है। अतः इसके लिए, हमें जहां अल्लाह तआला का धन्यवाद करना चाहिए, वहां एम टी.ए के काम करने वालों का जिन में स्वयंसेवक काम करने वाले भी हैं और पूर्ण रूप से सारा समय काम करने वाले भी उन का धन्यवाद अदा करना चाहिए। ये लोग कैमरे के पीछे हैं या ट्रांसमिशन में बैठे हुए हैं या अन्य कार्यों में लगे हैं। कई ऐसे कर्मचारी होते हैं जो प्रोग्राम बनाने और भेजने के लिए काम कर रहे होते हैं। कुछ श्रमिक जब मैं सफर पर जाता हूं तो, यहां से भी साथ जाते हैं और अपने सामान और अप लिंक करने वाले उपकरण भी साथ ले कर यहां से लेकर जाते हैं। फिर जिस देश में प्रोग्राम होता है उस देश के स्वयं सेवक और कार्यकर्ता भी शामिल हो रहे होते हैं। जर्मनी में भी इन स्वयंसेवकों और स्थायी काम करने वालों की टीम है जो विभिन्न दिल को लुभाने वाले कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। अल्लाह तआला उन्हें बदला दे और लोग पत्रों में यही लिखते हैं कि अल्लाह तआला एम टी ए के कार्यकर्ताओं पर फज़ल फरमाए हैं और उन का शुक्रिया अदा करते हैं। इसी तरह, विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले श्रमिक हैं जो जलसा पर अपने आप काम कर रहे होते हैं, और मेहमानों की सेवा में उन्होंने दिन रात एक किया होता है। ये भी अब हज़ारों की संख्या में इन देशों में हो गए हैं जहां पुरुष और महिलाऐं भी जवान लड़कियां हैं और बच्चे बच्चियां भी हैं। एक ऐसी रूह के साथ काम कर रहें हैं जो इस युग में केवल जमाअत अहमदिया में देखी जा सकती है, जिसका नज़ारा कुछ सप्ताह पहले ब्रिटेन के जलसा सालाना के आयोजन में देखा था, और यही दृश्य अब जर्मनी के जलसा सालाना पर देखा। अतः मैं जो हमेशा कहता हूं कि शामिल होने वालों को इन स्वयंसेवकों का शुक्रिया अदा करना चाहिए। जो एक जोश से अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए काम कर रहे होते हैं और इन्हीं श्रमिकों के यह कर्म ग़ैर अहमदी मेहमानों और ग़ैर मुस्लिम मेहमानों के लिए ख़ामोश तब्लीग़ का माध्यम बन रहे होते हैं।

जलसा के प्रोग्रामों में जो एम टी ए पर दिखाए जाते हैं इस के बारे में तो लोग अपनी टिप्पणी भेजते रहते हैं इन कार्यक्रमों से भी लाभान्वित हो रहे होते हैं और वे आनंद भी ले रहे होते हैं, लेकिन जलसा पर आए हुए ग़ैरो की अभिव्यक्तियां, भावनाएं और श्रमिकों की सेवा पर भावनाओं की अभिव्यक्ति न तो जलसा के दिनों में दिखाई और बतायाई जाता है और न ही यह किसी प्रकार से पता चल सकता है। ये स्वंय सेवक जो अपने कर्तव्य के अलावा एक ख़ामोश मुबल्लिग़ का काम रहे हैं, इनका पता न तो एम.टी.ए की सक्रीन दे रही होती और न ही कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाला इस का हक अदा कर सकते हैं।

इसी प्रकार जलसा में शामिल होने वाले भी अपने व्यवहार से एक अच्छा प्रभाव मेहमानों पर छोड़ रहे होते हैं जिस का प्रकटन बाद में मेहमान करते हैं। अत: आवश्यक है कि जलसा सालाना के प्रभावों का ये भाग भी लोगों के सामने प्रस्तुत किया जाए। इसलिए मैं ये प्रस्तुत करता हूं ताकि दुनिया में रहने वाले अहमदियों को भी पता चले कि जलसा के प्रभाव किस प्रकार लोगों के लिए प्रभाव का कारण बनते हैं और शामिल होने वालों और स्वयं सेवकों को भी पत चले कि इन के रवैया किस प्रकार खामोशी से ग़ैर-लोगों को शांति से इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षा के क़रीब ला रहे हैं। इस समय मैं इस बारे में विभिन्न देशों से आने वाले मेहमानों की अभिव्यिक्त प्रस्तुत करूंगा, ताकि जलसा की बरकतों का यह हिस्सा भी हमारे सामने आ जाए, और हमें अल्लाह तआला का और अधिक शुक्र करने का अवसर मिले और अपनी अवस्थाओं को और अधिक बेहतर करने की तरफ हमारा ध्यान हो।

एक अरबी नस्ल मुसलमान दोस्त खालिद मियाज़(Khalid Myaz) साहिब, जो रेड क्रॉस संगठन के साथ काम करते हैं, इस साल जर्मनी जलसा में शामिल हुए। वह अपने विचार वर्णन करते हुए कहते हैं कि जब मैं अपने ग़ैर-मुस्लिम दोस्तों को इस्लाम पर आरोप करते हुए सुनता था, तो मुसलमानों के आपसी संघर्षो और झगड़ों के कारण मैं इस्लाम का बचाव करने में असमर्थ था। आज इस जलसा में आप की जमाअत के सामूहिक और व्यक्तिगत शांति, प्रेम और आपसी अखंडता को देखते हुए और आप के लोगों में ख़लीफा के लिए प्यार और आज्ञाकारिता को देखते हुए, मेरा सिर गर्व से ऊंचा उठ गया है कि मैंने एक एसी जमाअत को अपनी आँखों से देख लिया है जिस के व्यक्ति शान्ति पूर्ण हैं। जिनका आयोजन संगिठत है। कहते हैं अब मैं आप का उदाहरण बड़े आराम से अपने ग़ैर-मुस्लिम दोस्तों को प्रस्तुत कर के उन के इस्लाम पर आरोप की प्रतिरक्षा कर सकता हूं।

फिर एक जर्मन दोस्त, मशायील फीचर(Michal Fisher) साहिब जलसा में शामिल हुए। कहते हैं कि मैं इस जलसा में शामिल होने से पहले अख़बार में पढ़ता रहता था कि अहमदी शांतिपूर्ण लोग हैं, लेकिन मेरे दिल में आता था कि अमल का दावा तो और बहुत सारे लोग भी करते हैं। अब यहां आ कर मैंने अपनी आंखों से देख लिया है कि अमन के दावा और व्यवहार की गवाही केवल इस जलसा में ही मिल सकती है जहां लोग प्यार और मुहब्बत से ख़ुद भी समय गुज़ारते हैं और आने वाले अन्य लोगों का भी स्वागत करते हैं। इतना बड़ा इज्तिमा और शान्ति वाला है कि देख कर आश्चर्य होता है वरना कहीं यदि पांच सौ लोग इकट्ठे हो जाएं तो लड़ाई हो जाती है। कहतें हैं कि मैं जलसा में शामिल हो और आप के इस शांतिपूर्ण माहौल को देखकर आप के इस अमन के दावा की पुष्टि करता हूं।

फिर एक जर्मन महिला मरासीअगला (Marachzogalla) जमाअत के साथ उन का एक स्थायी संबंध है। जलसा के दौरान उन्होंने बैअत का प्रोग्राम भी देखा था। वह कहती हैं कि मेरे प्रश्न तो लगभग एक-एक करके सभी हल हो गए हैं। अब मुझे लगता है कि मैं अधिक देर तक मेहमान बन कर नहीं आऊंगी, बल्कि अब मेरी ख़ुद इच्छा है कि मैं बैअत कर के जमाअत में शामिल हो जाऊं।

फिर एक महिला मारिया जोज़े (Maria Josey) इन का मूल सम्बन्ध दक्षिण अमेरिका से है और यहां बर्लिन में पढ़ाई करने के लिए आई हैं वह अपने विचार व्यक्त करते हुए कहती हैं कि मेरा इस से पहले इस्लाम या अहमदियत से कोई परिचय नहीं था। पैराग्वे के मुरब्बी सिलसिला के द्वारा मुझे जमाअत के बारे में मालूम हुआ और मुझे पता चला कि जर्मनी में जमाअत अहमदिया का जलसा होता है। अत: मैं जलसा में शामिल होने के लिए आ गई, यहां आकर मैं बहुत हैरान हुई कि इतनी क़ौमों और नस्लों और रंगों के लोग इस प्रकार एक साथ रह रहे हैं और हर जगह शांति और आराम का माहौल है। हर कोई संतुष्ट है किसी को भी कोई डर नहीं है, मेरे लिए ऐसे शांतिपूर्ण जलसा में शामिल होना एक नया अनुभव है, और मैं बर्लिन वापस जा कर जमाअत अहमदिया की मस्जिद से सम्पर्क करूंगी और इस जमाअत के साथ संबंधों को मज़बूत करूं। मुझे आप लोगों से शामिल होकर एक हार्दिक संतुष्टि मिली।

फिर मेसीडोनिया के एक सामाजिक कल्याण संगठन में काम कर रही तीन महिलाएं वहां आई थीं। एक कहती है कि हमारे आसपास मकदूनिया में बहुत से मुस्लिम हैं, परन्तु इस्लाम की यह किस्म और ऐसा सामाजिक प्रदर्शन पूरी तरह अप्रत्याशित साबित हुए। हमने आपके लोगों और आपकी शिक्षाओं और आपके नेतृत्व को देखा है और हम इस इहसास के साथ पास जाएंगे कि वहां के मुसलमानों को आप की परिचय करवा सकें। यह जमाअत और इसके आयोजन अन्य मुसलमानों के लिए एक आदर्श हैं, और ऐसी शांतिपूर्ण शिक्षा और एक व्यवस्थित संगठन इस योग्य है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करे। इस बार तो हम किसी के निमंत्रण पर यहां आई हैं, लेकिन हमें उम्मीद है कि हम अगले साल मेहमानों को साथ ले कर आऐंगी, और आप की जमाअत का परिचय मेसीडोनिया के मुसलमानों हम जाकर स्वंय कराऐंगी। तो इस प्रकार अल्लाह तआला तब्लीग़ के रास्ते खोलता है।

लेटेविया (Latvia) से एक ईसाई दोस्त माईकलोस (Mykolas) साहिब आए थे छात्र हैं और धर्मों पर अनुसंधान में शौक रखते हैं। वह कहते हैं कि मैं धर्मों में गहरी दिलचस्पी रखता हूं और यही वजह है कि मैंने आपकी जमाअत की शिक्षाओं को पढ़ा और अब मैंने इसका व्यावहारिक नमूना देख रहा हूं। मुझे आप की शिक्षाओं और आप लोगों का व्यवहार सकारात्मक अच्छा लगता है मैंने जलसा में शामिल होने वाले लोगों में एक रूहानी लगन महसूस की है

जलसा में शामिल होने वाले अहमदियों का अब हमेशा यह काम है कि ये लोग जो रूहानी लग्न महसूस करते हैं यह हम में जलसा के दिनों के लग्न न हो आरज़ी न हो बल्कि स्थायी रहने वाली लग्न हो।

लयूटेविया की एक पत्रकार महिला ऑगस्टिन (Augustine) ने कहा "मैं पिछले छह महीनों से इस्लाम के विभिन्न संप्रदायों पर एक परियोजना पर काम कर रही हूं।" इस लिए इस्तांबुल में भी गई,और वहां विभिन्न इस्लामी संप्रदायों से मिली लेकिन यहां इमाम जमाअत अहमदिया को देख कर मेरे दिल की जो अवस्था हुई है इसको वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। मैंने इन से मुलाकात के दौरान उनसे पूछा (उन्होंने मुझ से सवाल किया था) कि इस समय मुल्ला इज़म और उग्रवाद का क्या इलाज है? तो उन्होंने दो दो शब्दों में इस कठिन प्रश्न का पूरा जवाब दे दिया, जिसमें कहा गया कि समस्या का एकमात्र समाधान इस्लाम की सही शिक्षा और प्रशिक्षण और सही शिक्षा दी जाए। कहती हैं कि क्या वास्तव में इन समस्याओं का समाधान शिक्षा ही है और इस सही शिक्षा का ज्ञान हमें इस युग में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम ने दिया है।

अत: हम अहमिदयों को ग़ैरों को की इस प्रतिक्रिया पर केवल गर्व ही नहीं करना चाहिए, बल्कि हमें हमेशा हर समय अपनी व्यावहारिक परिस्थितियों में सुधार करने का प्रयास करना चाहिए।

लयूटेविया से कर्तुबा विश्वविद्यालय के प्रोफेसर लोली डायस(Lolly Daiz) साहिबा ने जलसा में शामिल होकर अपने विचारों का वर्णन करते हुए लिखा कि मैंने अपने जीवन में पहली बार मुसलमानों के इतने बड़े जलसा में शामिल हुई हूं। जब मैंने पहली बार इमाम जमाअत अहमदिया को इतने निकट से देखा, तो मेरे लिए एक अद्भुत अनुभव था, इस का अनुभव मुझे जीवन भर याद रहेगा। मेरी भावनाएं और मेरे शब्द मेरी भावनाओं का साथ नहीं देते हैं। मुझे विश्वास है कि जमाअत और इस जमाअत के ख़लीफा अन्य मुसलमानों से अलग हैं और मैं इस अन्तर को अपनी रूह में महसूस करती हूं। प्रत्येक अहमदी ने उस पर एक प्रभाव डाला जो वहां शामिल था।

इस वर्ष, बोस्निया के चालीस लोगों का प्रतिनिधिमंडल जलसा में शामिल हुआ। इन में अठारह अहमदी थे और बाकी लगभग अट्ठाईसा को तब्लीग़ की जा रही थी। एक मेहमान यसमीन साहिबा जो एक ग़ैर सरकारी संगठन की भी अध्यक्ष हैं, हाल ही में जमाअत का परिचय हुआ था और जलसा में शामिल हुईं,अपनी कार में यह ख़ुद ही 1200 किलोमीटर सफर तय कर के आई हैं। कहती हैं मुझे जलसा के इतने बड़े प्रबन्ध देख कर देखकर हैरानी हुई कि यह किस प्रकार के

लोग हैं जलसा की सारी व्यवस्थाओं को देख कर मुझे कहीं भी कमी नज़र नहीं आई।

अत: यह काम करने वालों की सेवा का प्रभाव है जो दूसरों को प्रभावित किए बिना नहीं रहता।

फिर एक मेहमान बोस्निया के रोमन समुदाय के एक प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ हैं, विद्वान के रूप में जाने जाते हैं और शहर तूज़ला के कौंसलर भी हैं। कहते हैं कि जलसा की सभी व्यवस्थाएं बहुत उत्तम रूप से की गईं हैं। मैंने इस से पहले इस तरह के एक कार्यक्रम में कभी भाग नहीं लिया था। यह जलसा मेरे लिए विभिन्न पहलुओं से शिक्षा देने वाला था। काम करने वालों की ईमानदारी को देखते हुए, मैं समझ गया कि ये लोग ईमान में बहुत मज़बूत हैं और उनके कार्यों तथा कथनों में समरूपता ही उनकी तरक्की का राज़ है और उन लोगों में, इस अवस्था को पैदा करने का कारण अपने ख़लीफा से संबंध है।

इसलिए जब ये लोग शामिल हो जाते हैं, तो ख़िलाफत की जो ग़लत धारणा इन के दिमाग़ों में है और जिस का भय है वह भी दूर हो जाता है अत: प्रत्येक अहमदी को प्रत्येक कर्मचारी हमेशा इन प्रभावों को बनाए रखें और इसकी रक्षा भी करें ।

एक ग़ैर-जमाअत दोस्त माहिर साहिब अपनी पत्नी के साथ अपने खर्च पर जलसा में शामिल हुए। कहते हैं कि यहां जिस तरह से मेहमानों का ध्यान रखा जाता है और जिस तरह प्रेम से लोग यहां व्यवहार करते हैं, मैं वास्तव में कहता हूं, अगर ये लोग हमें धरती पर सोने के लिए कहें और खाने के लिए केवल सोखी रोटी ही क्यों न दें, हमें इन से कोई शिकायत नहीं होगी क्योंकि जो प्यार और मुहब्बत हमें यहां से मिला है इस की दुनिया में कोई तुलना नहीं।

फिर बोस्निया से एक मेहमान,दयाना साहिबा भी जलसा में शामिल हुईं जो एक नर्स हैं और जमाअत के साथ इन के फैमली सम्बन्ध हैं। पति और बेटे के साथ बोस्निया और हर्ज़ेगोविना में,जमाअत के प्रोग्रामों में शामिल होती हैं बहुत योगदान भी करती हैं। यह अपने पति और माता-पिता के साथ स्वयं खर्च कर के यहां आई थीं। यह कहती हैं कि जलसा की सभी व्यवस्था बहुत उत्तम रूप से हुईं। इन ईमानदार काम करने वालों को देखकर हमें ख़ुद शर्म महसूस होती थी कि ये लोग हमारे लिए इतना कष्ट सहन कर रहे हैं।

फिर जलसा में शामिल होने वाले एक मेहमान अमीर साहिब जो पहली बार जलसा में शामिल हुए जलसा के माहौल ने उन पर बड़ा सकारात्मक प्रभाव छोड़ा। कहते हैं वापस जाकर मैंने यही संदेश देना है कि यह जलसा देख कर मैं अपने दिल की अवस्था को वर्णन नहीं कर सकता। इन बातों को केवल अनुभव किया जा सकता है इस लिए प्रत्येक का चाहिए कि इस जन्नत तुल्य परिवेश में कुछ दिन गुज़ारे ताकि उस को वास्तविक जन्नत के बारे में विश्वास पैदा हो जाए ।

हम में से वे लोग जो कुछ समस्याएं करने वाले हैं, आपस में लड़ाई झगड़े करने वाले हैं उन लोगों को इन लोगों की प्रतिक्रियाएं और टिप्पणियों को सुनने से शर्मिंदा होना चाहिए और उन्हें हमेशा एक दूसरे से प्यार करना चाहिए और उन्हें प्यार से व्यवहार करना चाहिए।

इस साल बुल्ग़ारिया से भी 52 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल जर्मनी जलसा में सम्मिलित हुआ। 20 लोग इन में अहमदी थे 32 ग़ैर-अहमदी मेहमान थे और लगभग 30 घंटे बस के द्वारा सफर कर के जर्मनी पहुंचे। इस प्रतिनिधिमंडल में व्यापारी भी थे वकील भी थे, लेक्चरार भी छात्र थे, और सामान्य वर्ग के जीवन से संबंधित लोग भी थे। एक औरत एसी नौवास (Acenova) कहती हैं कि मैं पहली बार जलसा में शामिल हुई हों। मैंने बुल्ग़ारिया के अहमदियों से जलसा के बारे में बहुत सुना था, जहां कई क़ौमों के लोग इकट्ठे थे। प्रत्येक एक-दूसरे से आदर और प्यार के साथ मिल रहे थे। यदि आप अपना जीवन बदलना चाहते हैं तो जलसा में आएं। मैंने यहां से बहुत कुछ सीख है। मैं दो चीज़ों का उल्लेख अवश्य करना चाहती हूं एक तो यहां अल्लाह तआला से मुहब्बत सिखाई जाती है दूसरे लोगों में एक-दूसरे से प्यार और सम्मान सिखाया जाता है।

बुल्गारिया भी वह देश है जहां जमाअत का पंजीकरण रद्द कर दिया गया है और ग़ैर-अहमदी उलमा हैं उन की तरफ से विरोध चरम को पहुंचा हुआ है जिसके कारण सरकार उनके प्रभाव में है इसलिए बुल्ग़ारिया की जमाअत के लिए भी दुआ करें अल्लाह तआला वहां भी हालात बेहतर करे फिर से जमाअत का पंजीकरण बहाल हो और हमें खुल कर तब्लीग़ करने और जमाअत के कामों को करने की अल्लाह तआला दोबारा तौफीक़ प्रदान फरमाए।

बल्गेरियाई प्रतिनिधिमंडल के एक मेहमान फिफ्को इनो (Phidko Anev) साहिब ने कहा कि मैं पहली बार ऐसे बरकत वाले जलसा में शामिल हो हुआ। शब्दों में वर्णन करना बहुत मुश्किल है। मैंने यहां सीखा है कि केवल अहमदी लोग ही वे लोग हैं जो वास्तव में शांति सिखाते हैं और दुनिया को एक जन्नत बनाना चाहते हैं। यहां वास्तव में जीवन का नूर मिलता है। ऐसा प्रकाश जो मनुष्य को जीवन देता है, मैं सभी लोगों को बताऊंगा कि वास्तविक इस्लाम अहमदियत है, जो दुनिया में शांति की कोशिश कर रहे हैं मैं अपने लिए दुआ का निवेदन करता हूं।

फिर इस प्रतिनिधिमंडल के एक मेहमान डी मुरॉफ (Pdemirov) साहिब मुझे कहते हैं कि जो आपका संबोधन था इस ने बहुत प्रभावित किया। इस में इंसान से मुहब्बत का वर्णन था। इसी तरह कहते हैं कि मुझे जब बच्चे पानी पिलाते थे और प्यार से बोलते थे तो बहुत अच्छा लगता था। जिस क़ौम के बच्चे ऐसे हों उस का भविष्य सुरक्षित है

फिर एक ईसाई महिला डिस्सिली (Desislaya) साहिबा जो एक मनोचिकित्सा की लेक्चरार हैं, कहती हैं कि मैं पहले बार जलसा में शामिल हुई हूं। यह जलसा तो एक चमत्कार है। यहां मुहब्बत, अमन, इज़्ज़त मिलती है। यहाँ मैंने कोई झगड़ा नहीं देखा है। हर कोई एक-दूसरे की सेवा कर रहा था। मुस्कुराते हुए चेहरों से मिलते थे। मैं परहेज़ी खाना खाती हूं। हज़ारों लोगों में मुझे परहेज़ी भोजन दिया गया है। बीमार हुई तो तुरन्त दवाएं दी गई हैं। कोई भी वी.आई.पी न था। सभी बराबर थे। फिर ख़ुत्बा जुम्अ: ने मुझे बहुत प्रभावित किया। इंसान से मुहब्बत, बुराइयों को छुपाना, एक-दूसरे की मदद करना, एक दूसरों के दोषों को दूसरों के सामने न प्रकट करना, बल्कि उसके लिए दुआ करना ये शिक्षाएं जो आप ने वर्णन की हैं मैं सोचती रही कि काश आज सारी दुनिया आप की आवाज़ सुने। अगर आज दुनिया सीधे रास्ता पर आना चाहती है तो इसे उन आवाज़ों को सुनना होगा और आप की शिक्षाओं को मानना होगा।

गिनिया बिसाऊ से सम्बन्ध रखने वाले एक युवक अबू बक्र साहिब, पुर्तगाल में सार्वजनिक सुरक्षा में विश्वविद्यालय में मास्टर कर रहे हैं। यह कहते हैं कि जलसा के अवसर पर मैंने जो सुरक्षा व्यवस्था देखी थी वह बहुत ही अनूठी थी। चालीस हज़ार की भीड़ को संभालना और वह भी पुलिस की मदद के बिना यह उनके लिए एक असाधारण बात है इतनी बड़ी भीड़ को संभालना एक स्टेट के लिए भी बड़ी मुश्किल बात है। लड़ाई झगड़े और फसाद की कोई न कोई घटना हो जाती है और यहां कोई घटना नहीं है। यहां मुझे जलसा के समय में पोलीस का कोई आदमी दिखाई नहीं दिया इस के बावजूद किसी को लड़ते झगड़ते नहीं देखा बल्कि सभी लोग प्यार और मुहब्बत की भावना में डूबे नज़र आए। इस बात ने मुझे बहुत प्रभावित किया है।

अब दूसरा दूसरे देश मैसीडोनिया आ गया। यहां से 65 लोगों के पर आधारित एक प्रतिनिधिमंडल जलसा में शामिल हुआ। इन में बड़ी संख्या मैसीडोनिया से जर्मनी तक लगभग दो हज़ार किलोमीटर की यात्रा बस के द्वारा लगभग 42 घंटों में पूरी करके पहुंचा। इनमें चार विभिन्न टीवी के पत्रकार थे। तीन अलग-अलग क्षेत्रीय टेलीविज़न के प्रतिनिधि एक राष्ट्रीय टेलीविज़न का पत्रकार था। पत्रकारों ने जलसा सालाना के दौरान रिकार्डिंग भी की और विभिन्न लोगों का साक्षात्कार भी किया, और 28 को मेरे से मुलाकात भी की। कहते हैं ये जो रिकर्डिंग हम ने की है यह सारी मुलाकात आदि इस की डोक्यूमेंटरी दिखाएंगे और प्रदर्शित करेंगे। इस में 32 ईसाई दोस्त थे,23 अहमदी और 10 ग़ैर अहमदी दोस्त थे इन में से एक ने आख़री दिन बैअत भी कर ली।

मैसी डोनिया के शहर बरीवो (Beravo) से आए हुए मेहमान बीलागस्ता टरीनचौस्का (Blagica Trencouska) जो पेशे से वकील हैं, कहती हैं कि मैं इस जलसा में पहली बार शामिल हुई हूँ। सभी व्यवस्था ज़बरदस्त थी कोई कमी न थी और मुझे कहती हैं कि भाषणों ने मुझ पर बहुत गहरा असर किया। मुझे इस बात से पता चला है कि इस्लाम का अर्थ वास्तव में शांति है न कि युद्ध। वास्तव में इस्लाम लोगों को जीवन के महत्त्वपूर्ण और मूलभूत मुद्दों को सिखाता है कि एक स्वस्थ समाज कैसे स्थापित किया जा सकता है। इस्लाम हमेशा सिखाता है कि नेकी की जीत हो और बुराई हार जाए और कहती हैं बहरहाल यह शिक्षा है। अगर हम इस पर कार्य करें तो विश्व युद्ध के बिना शांति और प्यार का एक घर बन जाए।

फिर यह कहती हैं कि जो आपने महिलाओं के अधिकारों के बारे में बात की थी मैं यह भी समझता हूं कि यह एक बड़ी अच्छी शिक्षा है औरत बच्चों की शिक्षा

और प्रशिक्षण के लिए ज़िम्मेदार है और इस मामले में इसकी भूमिका महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने अपने शब्दों में इस भाषण को महिलाओं के अधिकारों के रूप में इस तरह से वर्णित किया कि मैं तो विशेष रूप से कहूंगी कि आप ने यही कहा था कि महिला घोंसले का ध्यान रखने वाली है और उसका पति घोंसला का संरक्षक है। मैं समझती हूं कि पति परिवार का मुखिया है और औरत गर्दन एक दूसरे के बिना स्थापित नहीं हो सकती है। फिर कहते हैं कि बैअत ने मुझ पर बड़ा गहरा प्रभाव छोड़ा है ऐसा महसूस हो रहा था जैसे समय थम गया हो। हर तरफ लोग ही लोग थे। जो इन क्षणों से वंचित नहीं होना चाहते थे। सभी रास्ते एक ही दिशा की ओर जा रहे थे। जहां इमाम जमाअत अहमदिया था। उस समय जलसा गाह से बाहर ऐसे था जैसे कोई रेगिस्तान हो। कोई बाहर भी मौजूद नहीं था।

लेकिन मुझे कुछ शिकायतें भी हैं। जर्मनी के लोगों को इस बारे में ख़ुश नहीं होना चाहिए। अल्लाह तआला ने पर्दा डाला है लेकिन प्रशिक्षण विभाग को ध्यान में रखना चाहिए कि भविष्य में रेगिस्तान होना चाहिए क्योंकि ऐसी शिकायतों से पता चला है कि लोग जलसा के समय बाहर फिर रहे थे और इस एम.टी.ए वाले भी इन को दिखाते रहे। यह तो अच्छी बात है कि वास्तविकता दिखा दी लेकिन जलसा का कारवाई के दौरान जलसा की तरफ अधिक ध्यान होना चाहिए। इस लिए एम.टी. ए के माध्यम से बहुत से लोगों को पता चल गया कि क्या कमी थी।

कहती हैं मैंने जलसा के दौरान अपने इस्लाम के बारे में ज्ञान को बहुत बढ़ाया है हो सकता है कि शब्द तो मिट जाएं लेकिन अब जो इस्लाम की छवि बन चुकी है यह हमेशा स्थापित रहेगी।

मैसीडोनिया से आने वाली एक मेहमान औरत कहती हैं यह टीवी की पत्रकार हैं कि जलसा ने मुझे इस्लाम के बारे में नए दिशा निर्देश दिए हैं। एक समय था जब इस्लाम शब्द मुझ पर हराम था, अब मुझे इस्लाम का एक नया परिचय मिला है। मैं एक पत्रकार के रूप में इस्लाम के यह नया अनुभव प्राप्त करने पर आप की आभारी हूं। यह प्रभाव मैं अपने साथ ही मैसीडोनिया लेकर जा रही हूं और मुझ से मुलाकात भी की थी और कहा कि इस बात से मुझ पर बड़ा सकारात्मक प्रभाव डाला है और फिर कहा है कि इस्लाम को अगर समझना है तो फिर सीधा कुर्आन से समझना चाहिए और यह बात बहुत सहीह कही है वास्तविक इस्लाम को ऐसे कट्टरपंथी इस्लाम से मिलाना नहीं चाहिए। जो आज कल कुछ लोगों के द्वारा व्यक्त किया जा रहा है। अंत में मैं यह कहना चाहूंगी कि मैं इमाम जमाअत अहमदिया के सारे जवाबों से संतुष्ट हूं और आप ने मुझे नए मार्गों की तरफ मार्गदर्शन दिए और मार्ग दर्शन के क्षितिज की तरफ राह दिखाई है और अब मैंने इस्लाम की मूल तस्वीर देखी है।

फिर मेसीडोनिया से एक टीवी पत्रकार सालरेटीस्की (Cale Ristekski) साहिब थे यह कहते हैं कि मैं इस तरह की बैठक में पहली बार शामिल हुआ हूं। यह सब कुछ मेरे लिए नया था। मैंने मुसलमानों के बारे में बहुत कुछ सीखा है। जलसा पर काम करने वाले थके हुए नहीं लग रहे थे। काम करने वालों की अवस्था उन के लिए अजीब थी क्योंकि थके हुए नहीं लग रहे थे। मेरे लिए यह बहुत दिलचस्प है कि इतने सारे लोग एक ही स्थान पर थे और हर कोई अपनी नौकरी कर रहा था और किसी को भी कोई समस्या नहीं थी। मुझे इस बात की ख़ुशी है कि उनमें से कुछ मेरे दोस्त हैं और दोस्तों अमीर हैं। इस घटना के बाद मुझे अपने आप को समृद्ध करने लगा।

फिर मैसेडोनिया से आने वाले रोदे औलासका (Rode Deolska) जो टी. वी के पत्रकार हैं कहता हैं जलसा में मेरे लिए एक पत्रकार के रूप में एक नया अनुभव है। पत्रकारों के लिए एक वैश्विक रूप से कोई नई घटना या बात का महत्व होता है। मैं अपने आप को सौभाग्य वान समझती हूं कि मैंने इस जलसा को प्रत्यक्ष रूप से देखा है और इससे परिचय प्राप्त किया है। जलसा की सभी व्यवस्था ने मुझे एक विशेष प्रभाव दिया है। मैंने उन लोगों से इन्ट्रविू लिए जिन्होंने इस्लाम स्वीकार किया था। जब मैं मैसेडोनिया वापस जाऊंगा तो इस सारी रिकार्डिंग से एक वृत्तचित्र बनाउंगी और यह संदेश मैसीडोनन क़ौम तक पहुंचाऊंगी।

लिथुआनिया से संबंध रखने वाले एक मेहमान अवीटी (Augustinas Sulija) साहिब कहते हैं कि मुझे लगा जैसे मैं अपने घर पर था। आपकी जमाअत दुनिया के विभिन्न हिस्सों से थोड़े समय के लिए यहां इकठ्ठा हुई थी और हर तरफ वक्फ की एक रूह थी। यह मेरे जैसे अजनबी के लिए बहुत अजीब बात है। यह एक नई दुनिया है। मैं इस बात पर बहुत ख़ुश हूं कि मुझे बहुत सी संस्कृतियों और धर्मों, पहचान विभिन्न खाने पीने और परंपराओं को देखने का अवसर मिला है।

आप लोगों का अहमदी होने के नाते प्रत्येक दिन एक महान उद्देश्य के लिए कठिनाइयों का मुकाबला करना और फिर कोशिश करना सराहनीय है। आपके विचार बहुत उचित हैं। चरित्र उत्तम हैं इन में सार्वभौमिकता पाई जाती है।

लिथुआनिया से आने वाले एक मेहमान बताते हैं कि जमाअत को इतना बारीकी से देखकर ख़ुशी हुई है क्योंकि इससे पहले मुझे मुसलमानों के बारे में कुछ नहीं पता था मुझे इस जलसा से बहुत कुछ सीखने को मिला है और अब मैं एक उत्तम व्यक्ति के रूप में जीवन व्यतीत कर सकूंगा। इस धर्म की शिक्षा एक अच्छे इंसान बनने में सिद्ध और सहायक साबित होगी। मेरे साथ यहां बहुत अच्छा व्यवहार किया गया। कहते हैं मुझे ऐसा अनुभव कि जैसे मैं ही एक मेहमान हूं और हर एक आदमी मेरे आराम का ध्यान रख रहा था। मैं इस बात को बहुत सराहता हूं।

अत: ग़ैरों को भी(जलसा में) शामिल हो कर अपने अन्दर एक नेक परिवर्तन अनुभव होता है तो हम जिन के लिए यह जलसों का आयोजन किया जाता है उन को किस सीमा तक कोशिश कर के अपने अन्दर परिवर्तन पैदा करना चाहिए।

फिर लिथुआनिया के एक मेहमान मिसज़ अंग्रेदा (Ingrida) कहती हैं कि इस कार्यक्रम में मेरी पहली भागीदारी है लेकिन इतनी बड़ी संख्या में लोगों की भागीदारी मेरे लिए एक आश्चर्य की बात है। जहां कई धर्मों और सभ्यताओं के लोग एकजुट थे और सब के सब एक दूसरे की सहायता करनेवाले थे। दूसरा इस प्रोग्राम का सुन्दर प्रबन्ध भी हैरान करने वाला और प्रभावशाली था। और तकरीरें सुन कर और ख़लीफा से मुलाकात कर के मेरा अमाअत के बारे में जानने का शौक बढ़ गया है। मैं निश्चित रूप से आप की पुस्तकें पढ़ूंगी क्योंकि इमाम जामाअत के भाषणों से अनुमान लगाया गया है कि वे जो कहते हैं वह अक्ल के निकट है। मेरा यह अनुभव अच्छा रहा है और अब मैं अगले साल के जलसा की प्रतीक्षा करूँगी।

लेकिन एक परामर्श भी उन्होंने जर्मन वालों को दी है। कहती हैं कि मेरे विचार में दौरान विभिन्न प्रदर्शनियों और कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जो इसमें शामिल होने के बारे में अधिकतम जानकारी प्रदान करके सुधार किया जा सकता है ताकि लोग अधिक शामिल हो सकें।

इसी तरह, कोसोवो (Kosovo) के 18 लोगों का एक प्रतिनिधिमंडल था जिस में गैर-जमअत और बाकी 17 अहमद थे।

एस्ट्रोनिया के मेहमान लौरा (Laura) ने कहा कि मैं जलसा सालाना के प्रबन्ध से बहुत प्रभावित हूं। ऐसा लग रहा था जैसे प्रशासन ने हर तरह की स्थिति के लिए सब कुछ सोचा था। एक मेहमान के रूप में मेरी सम्मान भी किया गया और मेरी सभी जरूरतों का ध्यान रखा गया थी। मैंने जलसा के माहौल को सामान्य रूप से अच्छा पाया। जलसा में शामिल होने वाले शांतिपूर्ण, मैत्रीपूर्ण और सहायता करने वाले था। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि मैं बहुत स अच्छे लोगों से मिला जो कि जमाअत के बारे में अपने अनुभव जोश के साथ बताते रहे। मैंने जलसा की तकरीरें की सुनीं और विशेष रूप से इमाम जमाअत अहमदिया की तकरीरों से बहुत आन्नद उठाया जो कि वर्तमान अवस्था के बारे में थे। इन ख़िताबों का सन्देश बहुत स्पष्ट था इस में नए नए विचार और बातें थीं जो मैं अपने साथ लेकर वापस जाऊंगी। मिाम जमाअत अहमदिया का अन्तिम ख़िताब बहुत कुछ सोचने पर मजबूर करता है और इस का मुझ पर विशेष प्रभाव है। यह वास्तव में दिल को छू लेने वाला अनुभव है।

अल्बानिया से 48 व्यक्तियों पर आधारित एक प्रतिनिधिमंडल था। 1 9 अहमदी थे और 29 गैर-अल्बानियाई थे। 43 घंटों की यात्रा कर के यह पहुंचे थे। इन में सरकार की ओर से भी दो प्रतिनिधि भी थे, उनमें से एक वर्तमान में स्टेट कमेटी के अध्यक्ष थे।

फिर इसी प्रकार हंगरी से बीस लोगों का प्रतिनिधिमंडल जलसा में शामिल हुआ। नौ अन्य मेहमान थे। एक मेहमान (Agekjan Ajasztan) साहिबा कहती हैं। उनका वास्तविक देश अर्मेनिया है। हंगरी में अपने शहर गियोर(Gyor) में विशेष रूप से लोकप्रिय सामाजिक व्यक्ति हैं। हंगरी में मौजूद आर्मेनियन अल्पसंख्यक की कमेटीत के प्रवक्ता हैं। हंगरी के मुबल्लिग़ कहते हैं कि एक शाम जलसा की समाप्ति पर ख़ुद ही कहने लगीं इतने हज़ारों मुसलमान मर्दों के बीच में भय के बिना फिर रही हूं। यहां तो हर व्यक्ति सभ्य और सुशील और महिलाओं का सम्मान करनेवाला है। मीडिया जो कहती है कि आप्रवासी विशेषकर मुसलमान जो अनैतिक और महिलाओं से अनुचित व्यवहार करने वाले हैं, यहाँ आकर देखना ाहिए कि यह मुस्लिम कैसे सभ्य हैं। कहती हैं कि एक छोटा सा बच्चा मेरे पास आया उसने मुझ से पूछा नहीं कि तुम कौन हो या तुम कहाँ से

आई हो बल्कि बड़े प्यार से मेरे सामने पानी का गिलास रख दिया। जब मैंने पानी पी लिया तो एक और बच्चा पीछे से आया और खाली ग्लास को ले गया। यहां तो बड़े और बच्चे सभी प्यार के राजदूत हैं।

जब हाज़री बताई गई तो कहती हैं कि ईसाइयों को इस से अधिक दस गुना संख्या में शामिल होना चाहिए और सीखना चाहिए कि एक सभ्य समाज में एक-दूसरे का सम्मान कैसे किया जाता है।

हंगरी से एक मेहमान गेबर टॉमस (Gabour Tamas) साहिब ने अपने भाव व्यक्त करते हुए बताया कि जो धार्मिक वातावरण, शांति, मानवता और भाईचारा यहाँ देखने का मौका मिलता है इससे लाभ उठाने का मौका मिलता है और दुनिया में कहीं भी नहीं है मैंने अमेरिका में भी पादरी के रूप में एक लंबा समय रहा हूं और बहुत सारी दुनिया देखी है, लेकिन मैंने अब तक इस माहौल को नहीं देखा है। अहमदी लोग बहुत ही भाग्यशाली हैं कि उन के पास एक नेता है जो अहमदियों से प्यार करता है और उन्हें मार्गदर्शन करता है। इस जलसा में शामिल हो कर में अपने ईमान को मज़बूत महसूस करता हूं।कहते हैं कि आपकी जमाअत दिन प्रतिदिन बढ़ रही है और हम ईसाई दिन प्रतिदिन कम हो रहे हैं। हमारे चर्च ख़ाली हो रहे हैं और इमाम जमाअत अहमदिया से भी मैंने पूछा तो उन्होंने भी यही कहा कि भौतिकता बढ़ रही है और आध्यात्मिकता कम हो रही है। इस कारण से (है सब) कुछ होता है। कहते हैं कि हमें लोगों को बताना होगा कि हमारा एक मालिक है और इस को स्वीकार कर के ही दुनिया में शांति प्रक्रिया स्थापित हो सकती है। यह मेरी बात उन्होंने वर्णन की है।

एक सीरिया के दोस्त अकरम अद्दमोनी साहिब कहते हैं कि मुझे जमाअत के परिचय लगभग एक महीने पहले हुआ। मैं अहमदियों की एक मीटिंग में शामिल हुआ था, वहां मैंने पहली बार अहमदियों के बारे में सुना फिर मैं अपने परिवार के साथ जलसा में आ गया। लोग बहुत अच्छे और मेहमान नवाज़ी करने वाले थे जमाअत की आस्था के बारे में जिन्होंने बहुत प्रेम और दया के साथ व्यवहार करते थे। एक बात और में जलसा के क्षेत्र में चमत्कार के बारे में सोचता हूं कि इतनी बड़ी संख्या के बावजूद, तीन दिन के बीच कोई संघर्ष नहीं हुआ। यहां तक कि हज में भी लोग लड़ पढ़ते हैं, लेकिन यहां मैंने किसी को भी एक दूसरे के ख़िलाफ ज़ोर से बात करते नहीं देखा। एक और चीज़ जिसे मैं एक चमत्कार के रूप में समझता हूं वह है कि अहमदी मेहमान औरतों की तरफ भाईचारा और सम्मान की नज़र से देखते हैं यहां तक कि मेरी पत्नी ने भी मुझे कहा कि मैंने किसी को भी गंदी नज़र से देखते हुए नहीं पाया।

फिर ओसामा अबू मुहम्मद हलबी वर्णन करते हैं कि जलसा में इतनी बड़ी उपस्थिति के बावजूद, संगठन बहुत अच्छा था और शांति सुनिश्चित करने के लिए सभी सावधानी बरती गई थी और इतने बड़े श्रमिकों की सेवा के बावजूद उन की सेवा आदर्श थी। हमारे अहमदी भाइयों ने खाने और निवास में बहुत उत्तम सेवा प्रदान की। यह बात बहुत स्पष्ट है कि उनके सभी शब्दों और कार्यों में, वह सच्चाई देखने को मिली कि हम कई इस्लामी संप्रदायों में नहीं पाते। मैं अहमदी तो नहीं हूं, लेकिन आप लोगों के सभी कामों की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता।

एक सीरियन दोस्त महमूद साहिब जो पोलैंड में हैं कहते हैं कि इमाम जमाअत अहमदिया का भाषण सुनकर मेरा दिल ख़ुशी की भावनाओं से भरा हुआ है। सिर्फ एक ख़िताब में आपने दुनिया की सारी समस्याओं का हल कर दिया है। यह कहते हैं कि आप ने बताया कि कैसे विभिन्न देशों के बीच शांति स्थापित की जा सकती है और इस्लामी शिक्षाओं के प्रकाश में यह हल बताया। इस वजह से मुझे अपने मुस्लिम होने पर गर्व होने लग गया।

फिर एक मेहमान(Grunniger) साहिब कहते हैं कि इमाम जमाअत अहमदिया ने एक-दूसरे को समझने और एक-दूसरे के साथ बातचीत करने के बारे में बात की और आज दुनिया को इसकी आवश्यकता है। आपके शब्दों ने मुझे आज दुनिया की वर्तमान स्थिति के बारे में सोचने के लिए मजबूर किया है कुरआन की आयतों का ज़िक्र करते हुए यह बहुत स्पष्ट हो गया है कि इस्लाम अतिवाद का धर्म नहीं है और कहा है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो ऐसे इंसान थे जो शत्रुओं को माफ़ करते थे। कहते हैं ख़लीफा की यह तकरीर सुन कर मुझे पहली बार यह एहसास हुआ कि ख़लीफा इस्लाम वास्तव में क्या चीज़ है। इस्लाम हिरगिज़ ऐसा नहीं जिस प्रकार कि मीडिया दिखा रहा है।

जर्मनी में, पिछले दो तीन वर्षों से बैअत को आयोजन भी हो रहा है। इस वर्ष, ग्यारह देशों से संबंधित 33 लोगों को जलसा के दिनों में शामिल होकर बैअत करने की तौफीक पाई। इन में अल्बानिया, गाम्बिया, घाना, जर्मनी, इराक, यमन, मोरक्को, फिलिस्तीनी, तुर्की और लिथुआनिया शामिल हैं।

लमीस (Lamees) अब्दुल जलील साहिबा एस्टोनिया से शामिल हुई थीं, उन्होंने अपनी बैअत की तौफीक पाई थी? यह कहती हैं कि मैं एक फिलस्तीनी और एक ऐस्तोनियाई नौजवान से शादी की है। मैं दूसरी बार जलसा में शामिल हो रही हूं। पहली बार जलसा में शामिल होने के बाद जमाअत के बारे में कई संदेह और शंकाए ले कर वापस गई थी, लेकिन इस बार मैंने जलसा के दौरान बहुत दुआ की कि ख़ुदा तआला मुझे सीधे रास्ता दिखा दे और यदि जमाअत अहमदिया मेरे लिए सही रास्ता है और जीने का सही तरीका है तो अल्लाह तआला मुझे स्वयं मार्गदर्शन द। अत: कहती हैं कि अल्लाह तआला ने मुझे स्वयं तसल्ली दी और अगले दिन मैंने बैअत की ली। मैं अपने आप को बहुत भाग्यशाली समझती हूं कि इतने लोगों ने जलसा सालना में शामलि होने के लिए दुआ की। पिछले वर्ष मुझे जलसा की सारी तकरीरें सुनने का मौका नहीं मिला था, लेकिन इस वर्ष सारी तकरीरें बहुत ध्यान से सुनीं जिसके कारण अल्लाह तआला ने मेरे दिल में मुझे आश्वासन दिया कि यही जमाअत सच्ची है इसलिए मैंने बैअत की। कहती हैं कि मैंने औरतों में एसा भाईचारा किसी दूसरी स्थान पर नहीं देखा जो यहां था। विभिन्न देशों से आने वाली महिलाओं से मैंने संबंध बनाया जिन से शायद दोबारा कभी न मिल सकूं लेकिन हमेशा इन को अपनी दुआओं में याद रखोंगी। मेरा विश्वास है कि यह मेरा अहमदी होना और इस जमाअत से मिलना यह सब कुछ अल्लाह तआला की इच्छा है।

यह जलसा के बारे में कुछ प्रतिक्रियाएं हैं जो मैंने प्रस्तुत की हैं अल्लाह तआला की कृपा से जलसा बहुत से लोगों के दिलों को खोलता है और कई लोगों के संदेह दूर करता है। इस्लाम की वास्तविक तस्वीर उनके पास आती है। अल्लाह तआला इन बरकतों को हमेशा फैलाता चला जाए।

मीडिया कवरेज के अनुसार जलसा के दिन जुम्अ: के बाद मेरे साथ एक संवाददाता सम्मेलन थी जिसमें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मीडिया शामिल थे। इटली के अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में इटली,ऑस्ट्रिया, ब्राजील और बेल्जियम के टीवी और समाचार पत्र के प्रतिनिधि थे। राष्ट्रीय स्तर के जर्मनी के चार टीवी स्टेशन और तीन प्रिंट मीडिया के प्रतिनिधि उपस्थित थे। स्थानीय स्तर पर, N.TV एक रेडियो और चार प्रिंट मीडिया के प्रतिनिधि थे। जर्मनी में तीनों दिनों के जलसा की कवरेज हुई। रिपोर्ट के मुताबिक पांच टीवी चैनल तीन रेडियो चैनल और आठ अख़बारों और अन्य प्रिंट मीडिया द्वारा पांच करोड़ बानवे लाख से अधिक लोगों तक इस्लाम का सन्देश पहुंचा। इस के अतिरिक्त अंतरराष्ट्रीय मीडिया अगले सप्ताह तक जो कवरेज की आशा है और प्रतिनिधियों ने इस का उल्लेख किया गया है और उन का जो दर्शकों की संख्या का हिसाब है इस के अनुसार चार करोड़ तेरह लाख से उपर लोगों तक सन्देश पहुंचेगा। इसी तरह alislam वेबसाइट पर जलसा की कवरेज, जलसा सालाना जर्मनी की कारवाई एम.टी.ए जर्मन स्टूडियो के सहयोग से अपलोड की जाती रही। केंद्रीय प्रेस और मीडिया कार्यालय द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति भी अपलोड की गई थी। सोशल मीडिया में भी जलसा के कवरेज के बारे में कारवाई की गई, जिस में फेस बुक पर 32 पोस्ट प्रकाशित हुईं, जिसे 40 लाख लोगों ने देखा और हज़ारों लोगों ने पोस्ट पसंद किया और उस पर टिप्पणी की। इसी तरह ट्विटर पर भी जलसा के बारे में पांच लाख और छह हजार लोगों ने ट्वीट किया गया और पांच हज़ार आठ सौ लोगों ने दोबरा उत्तर दिया।

यह जलसा के बारे में लोगों की प्रतिक्रियाएं थीं। कुछ कमज़ोरियां भी होती हैं संक्षेप में बता देता हूं। एक तो जैसा कि मैं पहले वर्णन कर चुका हूं कि लोग बाहर फिरते रहे इसलिए प्रशिक्षण विभाग को भविष्य में और अधिक सक्रिय होना चाहिए ताकि लोग अन्य कार्यक्रमों के दौरान बाहर न जाएं। आवाज़ का प्रबंधन भी पहले दिन विशेष रूप से जुम्अ: को सही नहीं किया। फिर कुछ तकनीकी बातें थीं लेकिन बहरहाल उसके बाद कुछ ठीक हो गया। इस ओर भी जर्मन जमाअत को ध्यान देना चाहिए। फिर अनुवाद के समय भी शिकायतें हैं कि इस समय शोर आता रहा है अनुवाद के लिए कानों में जो उपकरण इस्तेमाल किए गए थे उन को भी ठीक किया जाना चाहिए।

आवास के लिए भी इस बार आशा से बहुत अधिक संख्या थी। क्योंकि वे अपेक्षा से अधिक थे। इसलिए अगर चार सौ लोगों को गद्दे नहीं मिले तो कोई

शेष पृष्ठ 12 पर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अप्रैल 2017 ई. (भाग -12)

☆हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत को नसीहत करते हुए फरमाया कि " सिलसिला का सम्मान और गरिमा का ख्याल रखो "और यह सिलसिला का सम्मान और गरिमा का ख्याल रखना एक मुरब्बी, उपदेशक, वाक्फ ज़िन्दगी का सबसे बढ़ कर काम है।

☆ एक मुरब्बी को फत्वा और तक्वा के बीच अंतर करने के लिए उसके मानकों को बढ़ाने की ज़रूरत है हमेशा इसका ध्यान रखें और यदि आप इन चीज़ों का ध्यान रखते हैं तो आप इस क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ भूमिका निभाने में सक्षम होंगे।

फैमली मुलाकातें और निकाहों की घोषणांए।

मुबल्लिग़ों को सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ की सुनहरी नसीहतें।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

21 अप्रैल 2017 (दिन शुक्रवार) (शेष.....)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: फिर आप लोगों ने जमाअत के लोगों को यह एहसास भी दिलाना है कि आप लोग कर्म करनेवाले आलिम हैं। इन मौलवियों की तरह नहीं हैं जो मैंम्बर पर खड़े होकर भाषण तो कर लेते हैं लेकिन जब अपनी बारी आए तो उनकी गुणवत्ता बिल्कुल बदल जाती हैं । बल्कि आप जो कहते हैं वह करके दिखाते हैं और आप जमाअत के हर व्यक्ति में यह भावना पैदा कर दें तो जमाअत के लोगों के अंदर आप का सम्मान कई गुना बढ़ जाएगा। सम्मान किसी सांसारिक ख़ुशामद या मुस्लेहत से नहीं बढ़ता, सम्मान अल्लाह तआला देता है और वह तभी होगा जब आप की कथनी और करनी एक जैसी होंगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इसी तरह कार्य क्षेत्र में कुछ व्यावहारिक मामले आपके सामने आएंगे। उनमें आप ने हमेशा विचार कर सोचकर वे निर्णय करने हैं जो जमाअत के हित में हों। जैसे खर्च आदि हैं। जहाँ आप ख़ुद संतोष प्रकट करें वहाँ अधिकारियों को समझाना भी आप का काम है कि हमारे खर्च संतोष से होने चाहिए। हम एक ग़रीब जमाअत हैं और कुछ व्यक्तियों के चन्दों से हमारी लागत पूरी होती है और जमाअत के लोगों की बहुमत ग़रीब है या हम यह नहीं कह सकते कि बहुत अमीर हैं। उस को आप इस बात का एहसास होना चाहिए कि हमारे जो चंदे आते हैं उनके मुकाबले लागत कम से कम हों और कम खर्च में अधिक लाभ उठाएं। अर्थशास्त्र का यह एक नियम है कि सफल वही होता है जो कम से कम ख़र्च में अधिकतम लाभ उठा सके। अत: आप भी इस बात को हमेशा याद रखना चाहिए। हमारी परियोजना बहुत बड़ी हैं और इंशा अल्लाह, अल्लाह तआला उन्हें पूरा करेगा क्योंकि अल्लाह तआला का वादा है। लेकिन इसके लिए हमें कोशिश करनी होगी। अल्लाह तआला ने हमें जो माध्यम और संसाधन दिए हैं उन्हें उपयोग करते हुए हम ने इन बड़ी परियोजनाओं को प्राप्त करना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत को नसीहत करते हुए फरमाया कि " सिलसिला का सम्मान और गरिमा का ख्याल रखो "और यह सिलसिला का सम्मान और गरिमा का ख्याल रखना एक मुरब्बी, उपदेशक, वाक्फ ज़िन्दगी का सबसे बढ़ कर काम है। हमेशा आप के सामने सिलसिला का सम्मान और गरिमा और प्रतिष्ठा का सवाल रहना चाहिए और यह तभी हो सकता है कि जैसा कि मैंने पहले भी कहा, जब आप हर पल अपने ऊपर नज़र रखते हुए गुज़रेगा, जहां अपनी इबादतों की गुणवत्ता बढ़ाने वाले हों वहाँ आपके आचरण भी उच्च हों और आप हर मामले में एक आदर्श आचरण रखने वाले की भूमिका निभाने वाले हों। घरों में हैं तो पारिवारिक रूप में आप के उत्कृष्ट नमूने हैं। बाहर हैं तो बोलचाल में, जैसा कि मैंने पहले भी कहा, उच्च नमूना हों। अपने कपड़ों में आपके अच्छे नमूने हों और हर व्यक्ति आप को देखकर यह कहने वाला हो कि ये वे लोग हैं जो जमाअत का सच्चा प्रतिनिधित्व करने वाले हैं, जो जमाअत का वास्तविक प्रतिनिधित्व करने वाले हैं और उनसे कोई ऐसी हरकत कभी नहीं होती जो जमाअत के हितों के ख़िलाफ हो। ये वे लोग हैं जो अपनी इज़्ज़तों को दाव पर लगा सकते हैं लेकिन जमाअत के सम्मान पर कभी अंतर नहीं आने देंगे। तो ये वे स्तर हैं जो आप ने प्राप्त करने हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत से फरमाया " तुम्हारा लक्ष्य होना चाहिए " और वह लक्ष्य क्या है?

اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡهِمۡ

यह वह लक्ष्य है जो आम तौर पर जमाअत के हर व्यक्ति के लिए है लेकिन मुरब्बी लिए सबसे बढ़कर है। यह बड़ा व्यापक काम है। जब हम इय्याका नअबदो कहते हैं तो जैसा कि पहले भी कह आया हूं अपनी इबादतों की गुणवत्ता बढ़ानी होंगी। यह केवल कल्पना नहीं एक लक्ष्य है और जमाअत की महानता और गरिमा को स्थापित करने के लिए भी है और फिर अल्लाह तआला से मदद मांगना अर्थात अल्लाह तआला के आगे ही झुकना है कभी किसी इंसान के आगे नहीं झुकना। किसी इंसान से दुनिया से प्रभावित नहीं होना बल्कि

बल्कि हर मदद अल्लाह तआला से लेनी है कि व्यक्ति भूलों और त्रुटियों का पुतला है और अल्लाह तआला से हमेशा यह दुआ करते रहना चाहिए कि اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ मुझे सीधे रास्ते पर चलाता रह। कभी ऐसी भूलों में न जाऊँ जिस से जमाअत के सम्मान और गरिमा पर आंच आए, जिस से जमाअत की महानता पर आंच आए जिस से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में प्रवेश कर के और फिर अपने आप को मुरब्बी का ख़िताब दिलवाकर उस पर आंच आए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहलि अज़ीज ने फरमाया: एक मुरब्बी ग़लत हरकत से केवल अपने आप को बदनाम नहीं करता बल्कि पूरे सिस्टम को बदनाम कर रहा है। अत: اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ हमेशा आप के सामने हो उस पर हमेशा विचार करते रहें और اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡهِمۡ यानी उन लोगों पर भरोसा करने की कोशिश करो जिन्हें अल्लाह तआला से पुरस्कृत किया गया है। अत: ऐसे पुरस्कार वाले जब बनेंगे तो ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अनुसार हम इन चार बातों पर अमल करने वाले बनेंगे और तभी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अनुसार आप के लक्ष्य को प्राप्त करने वाले होंगे। यह हमेशा हमारे सामने रखा जाना चाहिए और इन बातों के लिए सर्वोच्च चीज़ तक्वा भी प्रत्येक मुरब्बी के तक्वा का स्तर ऊंचा हो। एक बुज़ुर्ग के कपड़े पर एक थोड़ा सा दाग़ लगा हुआ था और वह धो रहे थे। उनके एक मुरीद ने पूछा कि हुज़ूर आप का तो यह फतवा दिया है कि इतने दाग से गंदगी नहीं होती कोई हर्ज नहीं है और नमाज़ आदि वैध है और कपड़े भी पवित्र हैं। उन्होंने कहा कि जो कुछ मैंने दिया था वह फतवा था और यह तक्वा है जो मैं कर रहा हूं। इसलिए एक मुरब्बी को फत्वा और तक्वा के बीच अंतर करने के लिए उसके मानकों को बढ़ाने की ज़रूरत है हमेशा इसका ध्यान रखें और यदि आप इन चीज़ों का ध्यान रखते हैं तो आप इस क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ भूमिका निभाने में सक्षम होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने आख़िर में फरमाया: अल्लाह करे कि

आप लोग कर्म क्षेत्र में जाकर केवल इन बातों को अपनी डायरी में नोट करने वाले न हों बल्कि पालन करने वाले भी हों और एक आदर्श मुरब्बी और उपदेशक बन जाएं। वह क्रांति पैदा करने वाले हैं जिसके पैदा करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह ने इस ज़माने में भेजा है और ख़िलाफत अहमदिया के बाज़ू बन जाएं। अल्लाह तआला आपको तौफीक़ प्रदान करे। आमीन।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का यह ख़िताब 12 बज कर 25 मिन्ट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दुआ करवाई। इस के बाद जामिया अहमदिया जर्मनी की सारी कक्षाओं ने बारी बारी अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया। जामिया से पास होने वाले मुरब्बियों की तस्वीर के बाद जामिया अहमदिया के उस्तादों और काम करने वालों ने भी अपने आक़ा के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया। तस्वीरों के इस प्रोग्रामों के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दया करते हुए नीचे लिखे उस्तादों के निवास स्थान पर पधारे।

आदरणीय मुहम्मद फातिह नासिर साहिब, आदरणीय हफीज़ुल्लाह भरवाना साहिब, आदरणीय हामिद इकबाल साहिब, आदरणीय रहमतुल्ला साहिब और आदरणीय सोहेल रियाज साहिबा। इन शिक्षकों का आवास जामिया अहमदिया के एक भाग में है।

बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहलि अज़ीज हॉल में आए जहां दोपहर के भोजन का आयोजन किया गया था। जामिया अहमदिया के सभी छात्रों और आज के इस समारोह में शामिल सभी मेहमानों ने अपने प्रिय आक़ा के साथ खाना खाया एहुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहलि अज़ीज ने कुछ छात्रों से बात की। हॉल के एक ओर जामिया के किचन के कर्मचारी खड़े थे जिन्होंने भोजन तैयार किया था। हुज़ूर अनवर ने दया से उनसे कहा बातचीत की

शिक्षक जामिया अहमदिया आदरणीय शम्स इकबाल साहिब की पत्नी पिछले दिनों बहुत बीमार रहे हैं। उनकी हालत इस हद तक बिगड़ गई थी कि कोमा में चली गई थीं और Ventilator पर डालना पड़ा, फैफड़ों ने पूरी तरह काम करना छोड़ दिया और एक दिन डॉक्टर ने यहां तक कह दिया कि अब जीवन की उम्मीद न के बराबर है और स्थिति बहुत ख़राब होने जा रही है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहलि अज़ीज की सेवा में रोगी की बीमारी की रिपोर्ट पेश की गईं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहलि अज़ीज हालत पूछते रहे और दुआ करते रहे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज ने फरमाया: "अल्लाह तआला चमत्कार पूर्ण ढंग से लम्बी आयु प्रदान करे। हुज़ूर अनवर ने होमियोपेथी दवाई भी दी। आदरणीय शम्स इकबाल का कहना है कि ज़ाहिरी तौर पर जीवन के कोई संकेत नहीं थे। लेकिन प्रिय हुज़ूर की दुआ से एक महान चमत्कार दिखाया। अगले ही दिन डॉक्टर ने मुझे बुलाया और कहा कि रात एक चमत्कार हुआ है कि Ventilator जिसकी शक्ति अत्यंत सीमा पर की हुई थी और इस मामले में भी वह काम नहीं कर रहा था कि अचानक जीवन बहाल होना शुरू हुआ और अब स्थिति यह है कि 30 प्रतिशत मरीज़ा के फेफड़ों ने काम करना शुरू कर दया रहे हैं और केवल 70% वेंटीलेटर से सहायता ले रहे हैं कुछ दिन बाद, डॉक्टर ने कहा कि उनके फेफड़े सही काम कर रहे हैं और शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा 98% है जो इस स्थिति में आश्चर्य की बात है। वह वेंटीलेटर से हटा दी गई गई थीं और घर भिजवा दिया गया था और इस प्रकार अल्लाह तआला की कृपा और दया से मुर्दा जीवित हो गया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहलि अज़ीज ने आदरणीय शम्स इकबाल साहिबा के बारे में पूछा जिस पर आदरणीय शम्स इकबाल साहिब ने बताया कि वह आज के इस प्रोग्राम में शामिल हैं और लजना की ओर से हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज लजना की ओर गए और उन से कहा कि अब तो यह ठीक हो गई हैं।

बाद में 1 बजकर 35 मिनट पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल " मस्जिद बैयतुल अज़ीज़ " में तशरीफ़ लाकर नमाज़ ज़ोहर और असर जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल बाहर आये तो जामिया के सभी छात्र रास्ता में एक द्वारा पंक्ति में खड़े थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिलने सारे छात्रों से बारी बारी हाथ मिलाया। और कुछ छात्रों से बातचीत भी की। इस अवसर पर शिक्षकों को भी हाथ मिलाने सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके बाद 2 बज कर 20 मिनट पर जामिया से " बैयतुस्सुबूह " फ्रैनकफ्रट के लिए रवाना हुए और 3 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल " बैयतुस्सुबूह " पधारे। हुज़ूर अनवर अपने निवास में चले गए।

फैमली मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार 6 बज कर 15 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर आए और परिवारों से मुलाक़ात शुरू हुई। आज शाम इस सत्र में 39 परिवारों के 142 लोगों और 3 दोस्तों ने व्यक्तिगत रूप से अपने प्यारे हुज़ूर से मिलने का सौभाग्य पाया। आज मुलाक़ात करने वालों में जर्मनी की 28 जमाअतों और शहरों से आने वाले दोस्तों और परिवार के अतिरिक्त पाकिस्तान से आने वाले दोस्त शामिल थे। मुलाक़ात करने वाले इन सभी परिवारों ने अपने प्यारे हुज़ूर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने प्यार से शिक्षा पाने वाले छात्रो और छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट दिए। मुलाक़ातों का यह कार्यक्रम साढ़े आठ बजे तक जारी रहा।

निकाहों के घोषणाएं

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद में पधारे। जहां कार्यक्रम के अनुसार आदरणीय हैदर अली जफर साहिब मुबल्लिग़ इन्चार्ज जर्मनी ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ की अनुमति से निम्नलिखित 12 निकाहों की घोषणा की (1) प्रिया आतका ज़फर साहिबा पुत्री आदरणीय मुजफ्फर अहमद साहिब का निकाह प्रिय मुदस्सर अहमद साहिब पुत्र आदरणीय मुनव्वर अहमद साहिब के साथ संपन्न हुआ। (2) प्रिया मारिया अहमद साहिबा पुत्री आदरणीय बदर अहमद साहिब (यू.के) का निकाह प्रिय इरफान अहमद आज़म साहिब पुत्र आदरणीय चौधरी मुनव्वर अहमद आज़म साहिब के साथ संपन्न हुआ। (3) प्रिया कमल नासिर साहिबा पुत्री आदरणीय नासिर अहमद काहलों साहिब का निकाह प्रिय उम्र मुबश्शरि साहिब पुत्र आदरणीय मुबश्शिर अहमद साहिब के साथ संपन्न हुआ। (4) प्रिया बादया यूसुफ साहिबा पुत्री आदरणीय राजा मुहम्मद यूसुफ ख़ान का निकाह प्रिय सफीर अहमद साहिब पुत्र आदरणीय नसीर अहमद साहिब के साथ संपन्न हुआ। (5) प्रिया नमीरह तारिक साहिबा पुत्री आदरणीय तारिक महमूद साहिब का निकाह प्रिय बुरहान अहमद लोन साहिब पुत्र आदरणीय फहीम अहमद लोन साहिब के साथ तय पाया। (6) प्रिया फरीहा महमूद साहिबा पुत्री आदरणीय महमूद अहमद साहिब का निकाह प्रिय हसन नईम साहिब पुत्र आदरणीय नईम अहमद साहिब के साथ संपन्न हुआ। (7) प्रिया रामीन शेख कलीम साहिबा पुत्री आदरणीय शेख कलीम अहमद साहिब का निकाह प्रिय विशेषज्ञ अहमद प्रमुख साहिब मनुष्य आदरणीय मुमताज़ अहमद साहिब के साथ संपन्न हुआ। (8) प्रिया आमना अज़हर ख़ान साहिबा पुत्री आदरणीय मुहम्मद अतहर साहिब का निकाह प्रिय वदूद राशिद ख़ान पुत्र आदरणीय मसूद अरशद ख़ान के साथ संपन्न हुआ। (9) प्रिया मारिया बतूल राजा जी पुत्री आदरणीय राजा ताहिर महमूद साहिब का निकाह प्रिय फरीद अहमद तूर साहिब पुत्र आदरणीय रहमतुल्लाह शम्स तूर साहिब के साथ संपन्न हुआ। (10) प्रिया फातिमा ताहिरा यूनुस साहिबा पुत्री आदरणीय मुहम्मद यूनुस बलोच साहिब का निकाह प्रिय अदील बाबर साहिब पुत्र आदरणीय बाबर जलाल साहिब के साथ संपन्न हुआ। (11) प्रिया नाईमह अहमद ताहिरा साहिबा पुत्री आदरणीय लतीफ अहमद साहिब का निकाह प्रिय नोमान अहमद साहिब पुत्र आदरणीय मुबश्शिर अहमद ताहिर साहिब के साथ संपन्न हुआ। (12) प्रिया सीमाब आसिफ साहिबा पुत्री आदरणीय आसिफ महमूद साहिब का निकाह प्रिय फरहान दाऊद हैदर साहिब पुत्र आदरणीय दाऊद हैदर साहिब के साथ संपन्न हुआ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ दौरान ठहरे रहे। निकाहों की घोषणा के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ नमाज़ मग़रिब और इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

इंटरनेट का उचित प्रयोग

विज्ञान के इस उन्नत युग में प्रति दिन नए नए अविष्कार हो रहे हैं । नई नई वस्तुएं खोजी जा रही रही हैं। इन का लाभ तथा हानि दोनों हैं। पवित्र क़ुर्आन मजीद ने एक उसूल वर्णन किया है कि जिस वस्तु की हानि उस के लाभ से अधिक है उस से दूर रहना चाहिए। एक मोमिन की भी यही शान है कि वह बेकार और व्यर्थ कामों से अपने आप को बचाता है। इन्टरनेट का उचित प्रयोग आज की सब से बड़ी आवश्यकता है। इस संबन्ध में क़ुर्आन, हदीस और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उद्धरण प्रस्तुत हैं।

हदीसें:

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَ سَلَّمَ مِنْ حُسْنِ اِسْلَامِ الْمَرْءِ تَرْکُهٗ مَا لَا یَعْنِیْهِ

(तिर्मज़ी अबवावुज़् ज़ुहद)

हज़रत अबू हुरैरह वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम्म ने फर्माया कि किसी व्यक्ति के इस्लाम की ख़ूबी यह है कि वह व्यर्थ बातों को छोड़ दे।

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ ابْنِ أَبِیْ أَوْفٰی قَالَ کَانَ النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ یُکْثِرُ الذِّکْرَ وَ یُقِلُّ اللَّغْوَ

(सुनन निसाई किताबुलि ज़ुम्मा)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम्म अल्लाह तआला का स्मरण बार बार किया करते थे और निरर्थक बात नहीं करते थे।

عَنْ أَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِیُّ ﷺ: وَاِیَّاکُمْ وَالْفُحْشَ، فَاِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ الْفُحْشَ وَ التَّفَحُّشَ

हज़रत अबु हुरैरा (रज़ि) से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम्म ने फर्माया: अशलीलता और निर्लज्जता पूर्ण बातों से बचो क्योंकि अल्लाह तआला अभद्रता और निर्लज्जता पूर्ण को नापसंद करता है।

(अहमद बिन हंबल भाग 3, पृ 534 प्रकाशन बेरूत लेबनान 9565)

عَنْ قَیْسِ بْنِ أَبِیْ غَرَزَةَ قَالَ أَتَانَا النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ فِی السُّوْقِ فَقَالَ إِنَّ هٰذِهِ السُّوْقَ یُخَالِطُهَا اللَّغْوُ وَحَلِفٌ فَشُوْبُوْهَا بِصَدَقَةٍ

हज़रत क़ैस बिन अबी गरज़त (रज़ि) बताते हैं कि हम बाजार में थे कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम्म आए और कहा कि निश्चित रूप से बाजार चालकों के साथ बेकार मामलों और बेकार किस्मों का अंश लगा रहता इस लिए (अपने व्यापारआदि) से सदके देते रहो।

* आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

अभद्रता हर करने वाले को बुरा बना देती है और शर्म प्रत्येक शर्म करने वाले को सुन्दरता प्रदान करती और उसे सुंदर बना देता है।

(तिर्मिज़ी अध्याय अबवाबुल् बिर्रे)

जो व्यक्ति दिल में अल्लाह तआला की शर्म रखता है वह अपने सिर और इसमें समाए हुए विचार की रक्षा करे।

(तिर्मज़ी अध्याय अबवाबुल् क़ियामत)

हज़रत मिर्ज़ा मस्रूर अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ इसकी व्याख्या में फर्माते हैं:

इसलिए मस्तिष्क में आने वाले प्रत्येक विचार को अल्लाह तआला की शर्म लिए हुए होना चाहिए। जब विचार शुद्ध होंगे तो कर्म भी शुद्ध होंगे। फिर बेकार चीज़ें ऐसे व्यक्ति पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकेंगी।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 15 जनवरी 2010)

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़र्माते हैं:

" وَ الَّذِیْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ इसके यही अर्थ हैं कि मोमिन वही हैं जो बेकार संबंधों से अपने प्रति अलग करते हैं और बेकार संबंध से अपने प्रति आपको अलग करना ख़ुदा तआला के संबंध का कारण है। मानो बेकार बातों से दिल को छुड़ाना ख़ुदा से दिल को लगा लेना है।"

(ज़मीमा (पूरक) बराहीन अहमदिया हिस्सा पंचम रूहानी खज़ायन भाग 21 पृष्ठ 199, 200)

"मोमिन केवल वही लोग नहीं हैं जो दुआ में विनम्रता अपनाते और दर्द और वेदना जताते हैं बल्कि उनसे बढ़कर वे आस्तिक हैं कि बावजूद विनम्रता और दर्द और वेदना के सभी बेकार बातों और बेकार कार्यों और बेकार संबंधों से एक तरफ हो जाते हैं और अपनी विनम्रता की स्थिति को बेहूदा कार्यों और बेकार बातों के साथ मिलाकर बेकार और बर्बाद होने नहीं देते और प्राकृतिक रूप से सभी बेकार बातों से अलग होते हैं और बेहूदा बातों और बेहूदा कार्यों से एक घृणा उन के दिलों में पैदा हो जाती है ... इसलिये दुनिया की बेकार बातों और बेकार कार्यों और बेकार सैर तमाशा और बेकार संगतों से वास्तव में उसी वक़्त इंसान का दिल ठंडा होता है जब दिल का कृपालु ख़ुदा से संबंध हो और दिल पर उसकी महानता और आभा छा जाए।

... ख़ुदा में विश्वास लाकर प्रत्येक बेकार बात और बेकार काम और बेकार मजलिसें और बेकार हरकतें और बेकार संबंध और बेकार जोश से किनारे हुआ जाए।"

(पूरक बराहीन अहमदिया हिस्सा पंचम रूहानी ख़ज़ायन भाग 21 पृष्ठ 201, 202)

हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस (पंचम) अय्यदहुल्लाह तआला फ़र्माते हैं:

"फिर इंटरनेट का दुरुपयोग यह भी एक मामले में आजकल बहुत बड़ी बेकार चीज़ है। इसने कई घरों को उजाड़ दिया है। एक तो यह संपर्क का बड़ा सस्ता स्रोत है तो उसके द्वारा कुछ लोग फिरते फिराते रहते हैं और पता नहीं कहाँ तक पहुँच जाते हैं। शुरू में कार्य के रूप में सब काम हो रहा है फिर बाद में यही कार्य आदत बन जाती है और गले का हार बन जाता है छोड़ना मुश्किल हो जाता है क्योंकि यह भी एक प्रकार का नशा है और नशा भी बेकार चीज़ों में से है। क्योंकि उस पर बैठते हैं कुछ बार जब आदत पड़ जाती है तो बेकार चीज़ों की तलाश में घंटों अकारण, बे उद्देश्य समय बर्बाद कर रहे हैं। तो यह सब बेकार चीजें हैं। आजकल कुछ वेबसाइटों जहां जमाअत के ख़िलाफ या जमाअत के किसी व्यक्ति के खिलाफ गंदे प्रचार या आरोप लगाने का सिलसिला शुरू हुआ है। तो लगाने वाले तो ख़ैर अपने विचार में समझ रहे हैं, अपनी बुद्धि के अनुसार यह बकवास कर के वह जमाअत को कोई नुकसान पहुंचा रहे हैं हालांकि उनकी इन बेकार चीज़ों पर किसी की कोई दृष्टि नहीं होती। जमाअत शायद एक प्रतिशत वर्ग भी यह नहीं देखता है, उसे शायद पता भी न हो। तो बहरहाल यह सभी बेकार चीज़े हैं ... इसलिए जिस सीमा तक बेकार चीज़ों से बचा जा सकता है, बचना चाहिए और इस आविष्कार का बेहतर उद्देश्य से लाभ उठाना चाहिए।

ज्ञान बढ़ाने के लिए इंटरनेट के आविष्कार का उपयोग करें। यह नहीं कि आपत्ति वाली वेबसाइटें खोजते रहें या इंटरनेट पर बैठ स्थायी बातें करते रहें। आजकल बातें जिसे (Chatting) कहते हैं। कई बार यह बातें मज्लिसों का रूप धारण कर लेती हैं इस में भी फिर लोगों पर आरोप लगाए जा रहे होते हैं, लोगों का मज़ाक भी उड़ाया जा रहा होता है तो यह भी एक व्यापक मजलिस का एक रूप बन चुकी है इसलिए इस से भी बचना चाहिए। (ख़ुत्बाते मस्रूर भाग 2 पृष्ठ 593 से 595)

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

वादा बढ़ा दिया और उसे 21 हज़ार पाउंड बना दिया। मोमिनों में आगे बढ़ने का एक ईमान वर्धक नज़ारा था प्रत्येक प्रतीक्षा कर रहाथा कि देखें अब क्या होता है। इसके तुरंत बाद उस ईमानदारी महिला से एक कागज़ प्राप्त हुआ जिसके लेख ने सभी पुरुषों को ला-जवाब कर दिया। लिखा था मेरी ओर से नोट कर लिया जाए कि मस्जिद के बनाने के लिए सारी जमाअत में से जो कोई भी सब से अधिक वादा लिखवाएगा मेरा वादा प्रत्येक अवस्था में् उस से एक हज़ार पाऊंड अधिक होगा। नेकी में आगे बढ़ने का क्या ही प्रतिस्पर्धात्मक उदाहरण था जो उस अहमदी औरत ने दिखाया।

आदरणीया करीम बीबी साहिबा पत्नी आदरणीया मुंशी इमाम दीन साहब का उदाहरण भी अजीब शान लिए हैं । आप वित्तीय स्थिति की कमज़ोरी के बावजूद हर समय वित्तीय कुर्बानी की राहें तलाश करती रहती थीं और प्रतीक्षा करती रहती थीं कि कब वित्तीय कुर्बानी का कोई नया अवसर आए और वह सब से पहले लब्बैक कहें। आपके असाधारण जोश का इस घटना से पता चलता है कि जब उन्होंने वसीयत के सारे चन्दे अदा करने के बाद हिस्सा जायदाद की सारी रकम भी अदा कर दी तो हुआ यूं की दफतर की भूल के कारण वह सारी की सारी रकम किसी और स्थान पर डाल दी गई। और एक लम्बे समय के बाद इस भूल का पता चला। इस भुल विवरण को कागज़ों में ठीक कर के आसानी से किया जा सकता था। परन्तु इस नेक औरत ने पसन्द न किया की दी गई रकम को निकाल कर किसी अन्य हिस्सा में डाला जाए। उन्होंने एक बार अदा की गई रकम के बराबर सारी रकम दोबारा अदा कर के अपने हिसाब को साफ किया।

(असहाबे अहमद भाग 1 पृष्ठ 162)

अल्लाह ने वित्तीय कुर्बानी के क्षेत्र में अद्वितीय रूप में पुरुषों और महिलाओं को माली कुरबानियों के क्षेत्र में आश्चर्य चकित करने वाले उदाहरण प्रस्तुत करने की तौफीक़ दी है। धनवानों को भी यह सामर्थ्य प्रदान किया है कि वे दिल खोल कर अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए अपनी खुदा तआला द्वारा दी गई दौलत कुर्बान करते चले जाएं और ग़रीब भी अपनी नेक तमन्नाओं के अनुसार किसी से पीछे न रहें। कई घटनाओं में से एक ने एक दुर्लभ घटना प्रस्तुत करता हूं।

कादियान के आरंम्भिक ज़माना की बात है ख़िलफत सानिया में, एक ग़रीब महिला की कुर्बानी की घटना मेरी माता जी ने कई बार सुनाई। हज़रत मुस्लेह मौऊद एक मज्लिस में माली कुरबानी की तहरीक फरमा रहे थे और यह ग़रीब और दरिद्र औरत बेचैन हो रही थी। कि धनवान लोग तो कुरबानी करते जा रहे हैं और मैं वंचित हो रही हूं। बहुत बैचेन हो कर घर आई। घर की चीज़ें बेच कर तो पहले ही चन्दा दे चुकी थी सेहन में एक मुर्ग़ी नज़र आई। वही लाकर हुज़ूर के सामने प्रस्तुत कर दी। फिर परेशानी में घर गई और दो तीन अंडे उठा कर घर ले आई। कुर्बानी का जोश इतना अधिक था कि आराम से बैठना मुश्किल था। इधर हज़रत मुस्लेह मौऊद का ख़िताब जारी था इधर उधर देखने लगी कि कुछ मिले तो वह भी प्रस्तुत कर दूं। पति एक टूटी हुई चारपाई पर बैठा हुआ था उस ने कहा कि अब क्या ढूंढती हो सब कुछ तो दे चुकी हो घर में तो अब कुछ भी नहीं। इस ख़ुदा की बन्दी ने जो अपना सब कुछ अल्लाह की राह में कुर्बान करने की कसम खाए बैठी थी बड़े ग़ुस्सा में कहा:

चुप कर के बैठ रहो मेरा बस चले तो मैं तुम्हें भी बेच कर चन्दा में दे दूं।"

(अहमदियत ने दुनिया को क्या दिया? पृष्ठ 49)

समापन

इस्लाम और अहमदियत के इन आशिकों की कुरबानियां और उन के ईमान वर्धक नज़ारे हमारे लिए मार्ग दर्शन हैं। एक एक घटना हमें आमंत्रित कर रही है कि इन घटनाओं को पढ़ कर एक पल के लिए ख़ुश होने और सिर धुनने पर ही बस नहीं होना बल्कि इन पवित्र नमूनों को अपने जीवन में भी जारी कर के दिखाएँ। इस पथ पर चलने वालों ने तो अपनी मंजिल पाली। अब हमारा कर्तव्य बनता है कि हम भी वित्तीय कुर्बानी की उन राहों पर पूरी निष्ठा के साथ आगे बढ़ते चले जाएं और कुर्बानियों के जिस झण्डा को हमारे पूर्वजों ने झुकने नहीं दिया हम भी अपनी जानें फ़िदा करें, अपने माल कुर्बान कर दें, लेकिन अहमदियत के नाम पर हरगिज़ कोई आंच या धब्बा न आने दें।

हमें यह याद रखना चाहिए कि यह दुनिया अस्थायी और कुछ दिन की है। हम में से प्रत्येक एक दिन इस अस्थायी ठिकाना को पीछे छोड़ कर परलोक की यात्रा करनी है। सोचने और चिंता करने की बात यह है कि हम इस परलोक की यात्रा के लिए क्या रास्ते का खर्च तैयार किया है? अगर किसी के मन में यह है कि मैं अपनी संपत्तियां, अपने महल, अपनी दौलतें और अपनी जागीरें अपने साथ लेकर जाऊँगा तो उस व्यक्ति से अधिक मूर्ख और अज्ञानी कौन हो सकता है। इस दुनिया में आने वाले हर कोई खाली आता है और खाली ही जाता है। दुनिया के सभी धन, सभी संपत्तियां, पत्नियां, बच्चों, रिश्तेदारों और दोस्तों, सभी एक ही दुनिया में रहते हैं। मरने वाले के साथ अगर कोई चीज़ उस दुनिया में है और परलोक में उसे कोई लाभ दे सकती है तो वह उसके नेक कर्म हैं।

अन्य अच्छे कर्मों के अतिरिक्त, माली कुर्बानियों का एक उच्च स्तर स्थान होता है। अगर अल्लाह के दिए गए धन को सुख के साथ ख़ुदा के रास्ते में खर्च करके अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त कर ली जाए तो यह कुर्बानी ज़रूर वह रास्ता का धन है जो उस व्यक्ति के साथ परलोक में जाता है और यह सच और सत्य है धन है जो हशर के मैदान में भी उसकी सहायता करेगा। हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद ने क्या ख़ूब कहा है:

यह ज़र वा माल तो दुनिया में रह जाएंगे
हश्र को रोज़ जो काम आए वह ज़र पैदा कर पैदा

अत: हम में से कोई इस ग़लती का शिकार न हो कि दुनिया को दौलत आख़िरत में इस के काम आएगी। एक बुद्धिमान और सफल व्यक्ति वह व्यक्ति होता है जो इस नश्वर संपत्ति को भगवान के रास्ते में कुर्बान करता है और ख़ुदा तआला की ख़ुशी के अनन्त और अनमोल धन को ख़रीदता है और इस शंका में कभी नहीं पड़ता कि धन खर्च करने के पैसा कम नहीं होता बल्कि यह बढ़ती जाती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक फारसी शेर में फरमाते हैं:

ज़बज़ल माल दर राहश कसे मुफ्लित नमी गरदद
ख़ुदा ख़ुद मैय शवद अगर हिम्मत शवद पैदा

कि ख़ुदा की रहा में माल खर्च करने से कभी कोई ग़रीब नहीं होता अगर इंसान इस राह में बहादुरी दिखाए तो ख़ुदा ख़ुद उस का सहायक और समर्थक हो जाता है।

रहमान और रहीम की जन्नत के प्रत्येक इच्छुक का कर्तव्य है कि वह सच्चे वादों वाले ख़ुदा के वादों पर भरोसा करते हुए माली कुर्बानी के प्रत्येक क्षेत्र में इस शान से बढ़ता चला जाए कि इस जीवन में ख़ुदा तआला की तरफ से यह ख़ुख ख़बरी सुन ले कि

وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ فَادْخُلِيْ فِيْ عِبَادِيْ

(सूरे अल्फ़जर 31-30) कि आओ मेरे बन्दो! मेरी राह में अपने आप को फिदा कर दो। दौड़ते हुए आओ और मेरी ख़ुशी की अनन्त में प्रवेश कर जाओ। अल्लाह तआला हम सब को इन नेकों में शामिल कर ले।

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 2017-2019/45- Vol. 2 Thursday 5 October 2017 Issue No. 40

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 1 का शेष

यह भविष्यवाणी भी उसी शरमपत आर्य को समय पूर्व बताई गई थी तथा इस इल्हाम का अर्थ यह था कि मेरे भाई की असमय और अचानक मृत्यु होगी जो शोक का कारण होगी। जब यह इल्हाम हुआ तो उस दिन या उससे एक दिन पूर्व कथित शरमपत के घर में एक लड़के ने जन्म लिया जिसका नाम उसने अमीनचन्द रखा तथा उसने मुझे आकर बताया कि मेरे घर में लड़का पैदा हुआ है। मैंने जिसका नाम अमीनचन्द रखा है मैंने कहा कि मुझे अभी इल्हाम हुआ है कि اے عمّی بازئ خویش کر دی و مرا افسوس بسیار دادی और अभी मुझ पर इस इल्हाम के अर्थ नहीं खुले। मैं डरता हूं कि इससे अभिप्राय तेरा लड़का अमीन चन्द ही न हो क्योंकि मेरे पास तेरा आना-जाना बहुत है तथा इल्हामों में कभी ऐसा संयोग हो जाता है कि किसी संबंध रखने वाले व्यक्ति के बारे में इल्हाम होता है। वह यह बात सुनकर भयभीत हो गया। उसने घर पहुंचते ही अपने लड़के का नाम परिवर्तित कर दिया अर्थात् अमीन-चन्द के स्थान पर गोकुलचन्द नाम रख दिया। वह लड़का अब तक जीवित है तथा इन दिनों किसी ज़िले के बन्दोबस्त में मिस्ल रीडर है। तत्पश्चात् मुझ पर स्पष्ट किया गया कि यह इल्हाम मेरे भाई की मृत्यु की ओर संकेत है। अत: मेरा भाई दो-तीन दिन के पश्चात् आकस्मिक तौर पर मृत्यु को प्राप्त हो गया तथा मेरे उस लड़के को उसकी मृत्यु का शोक पहुंचा और इस चक्र में आकर कथित शरमपत जो कट्टर पक्षपाती कट्टर आर्य है साक्षी बन गया। यदि कहो कि ख़ुदा के इल्हाम के अर्थ उसी समय क्यों न खोले गए तो इसके उत्तर में मैं कहता हूं कि क़ुर्आन की कुछ सूरह में प्रारंभ में आने वाले अक्षरों के अब तक अर्थ नहीं खोले गए। कौन जानता है कि طٰہٰ (ता हा) क्या है और نٓ नून क्या वस्तु है तथा كٓهٰيٰعٓصٓ क्या वस्तु है और आयत سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ के बारे में हदीस में है आंहज़रत[स.अ.व.] ने कहा कि अब तक मुझे इसके अर्थ ज्ञात नहीं तथा आप ने कहा कि मुझे स्वर्ग के अंगूर का गुच्छा दिया गया कि यह अबू जहल के लिए है, मैं इसकी ताबीर समझ न सका जब तक उसका बेटा इकरिमा मुसलमान हुआ और और मुझे हिजरत (प्रवास) की भूमि बताई गई और मैं न समझ सका कि वह मदीना है। अत: ऐसे आरोप अल्लाह के नियमों का ज्ञान न होने के कारण हृदयों में उत्पन्न होते हैं।

62. बासठवां निशान - रूमी कॉन्सलेट के विनाश के बारे में भविष्यवाणी है जिसका विस्तृत वर्णन मेरी पुस्तकों में लिखा है।

63. तिरेसठवां निशान - बराहीन अहमदिया में मेरे बारे में ख़ुदा तआला की यह भविष्यवाणी है कि क़त्ल इत्यादि के षड्यंत्रों से मैं बचाया जाऊंगा। अत: आज तक अनेकों आक्रमणों के बावजूद ख़ुदा तआला ने शत्रुओं के षड्यंत्रों से मेरी रक्षा की।

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 231 -234, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22,)

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 7 का शेष

एसी बात नहीं लेकिन जर्मन जमाअत को बहरहाल भविष्य में प्रबंधन करना चाहिए। जलसा गाह में प्रबन्ध की भी कुछ लोगों ने शिकायत की है। कहते हैं कि एक बड़ी कमी थी और इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है और इस का एक कारण यह भी हो सकता है कि शीतल करने की प्रणाली थी इस में एक मशीन भी ख़राब हो गई जिस के कारण हाल के अन्दर बहुत गर्मी थी लेकिन यहां यू. के जलसा में भी तो लोग मार्की में बैठते हैं और बहुत गर्मी होती है। इसलिए यह कोई बहाना नहीं है। प्रशासन को प्रशिक्षण विभाग को इस तरफ ध्यान देना चाहिए और सारा साल अहमदियों को इस ओर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

बहरहाल जो कुछ कमियां हैं उन्हें मैंने भिजवा दिया है अब इस पर वह स्वयं ही विचार करें और उन्हें सुधारें। दूसरा खाने के बारे में भी शिकायतें आती रही हैं। पहले दिन अगर हाज़री के अनुसार नहीं बन सका तो अगले दिन यह बेहतर प्रबंधन होना चाहिए था लेकिन यही हुआ कि सालन समाप्त हो गया और अंत में आपातकालीन दाल बनाई जाती है वही पकती रही और बहुत से लोगों को वही मिलती रही। इस ओर भी ध्यान देना चाहिए और अच्छी तरह से योजना होनी चाहिए।

अल्लाह तआला सब काम करने वालों को भी तौफीक दे कि वे भविष्य में भी इस में बेहतरी पैदा कर सकें।

इस यात्रा के दौरान, एक मस्जिद के उद्घाटन का समारोह की तौफीक मिली। अल्लाह तआला के फज़ल से इस का बहुत अच्छा प्रभाव मेहमानों पर हुआ।और उन्होंने स्पष्ट शब्दों में इस बात को व्यक्त किया कि यह इस्लाम तो जर्मनी में फैलाना चाहिए। दो टीवी चैनल और दो अख़बारों के प्रतिनिधि आए हुए थे। जिनके माध्यम से इस मस्जिद की ख़बर साढ़े सोला लाख लोगों तक पहुंची। इस मीडिया के माध्यम से इस्लाम का सन्देश पहुंचा। अल्लाह तआला जर्मनी जमाअत को तौफीक दे कि वह भविष्य में इस से बढ़ कर इस्लाम का सन्देश पहुंचाने वाले हों जो अब परिचय हुआ है इस में भी ओर अधिक वृद्धि हो।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad